Almira 2
shelf 3
23

अथ जगन्नाथमाहात्म्यभा०टी०प्रा०

श्रीगणेशाय नमः !! एक समय अनेक तीर्थोंसे युक्त, फल फूल वृक्षों से सुशोभित तपोभूमि नैमिषारण्यमें शौनकादि अठासी हजार ऋषीश्वर सभा को करते भये ॥ १ ॥ २ ॥ ॰ ॥ सम्पूर्ण तीथा के सत्व जानने के लिये और समस्त क्षेत्रों के तत्व

श्रीगणेशाय नमः ॥ एकदानेमिषारण्येपुण्येसर्वसुखप्रदे । नानातीर्थसमायुक्तेनानागुल्ममनोरमे ॥१॥फलपुष्पादिवृक्षाणांनिकरैः परिमंजुले । तपसाश्रमसंकीर्णेख्यातपरमपावने ॥२॥ तादृशेपिवने तत्रशौनकाद्यामुनीश्वराः । सङ्गीभूयसमस्तास्तेगोष्ठींचक्रुर्मनोरमाम् ॥३॥ समस्ततीर्थसत्वानांज्ञा-नायजगतीतले । क्षेत्राणांशिवदानांचजिज्ञासायैत्वरान्विताः ॥४॥ सभायांजायमानायांतत्क्षणेच मुनीश्वराः । जटामण्डलधारीचकौपीनधृतसुन्दरः ॥५॥ कृष्णाजिनोत्तरीयेणाविराजितवपुर्मुनिः । तंदृष्ट्वापरमप्रीताः शौनकाद्यास्तपस्विनः॥६॥उत्थायचनमश्चक्रुः सोपितान्दण्डवद्भुवि । प्रणामं कृ

जानने के लिये सभा कियी ॥ ४ ॥ जटामंगल को धारण किये कौपीन को पहिनें काले मृगा के चर्म को लिये सूतजी आये ॥ ५ ॥ ६ ॥ सूतजी को आते देखकर शौनकादिक ऋषि हाथ जोड़कर उठ खडे हुए और साष्टाङ्ग दण्डवत् किया कुशल

प्रश्न पूँछा ॥ ७ । फिर सुखपूर्वक बैठेहुये सूतजी से शौनकादि ऋषि हाथ जोडकर संसार के सुख के लिये बोले ॥ ८ ॥ हे भगवन् ! हे सर्वधर्मज्ञ ? हे सर्वतीर्थार्थतत्त्ववित् ? आप मुझपर कृपाकरके कल्याण से विभूषित समस्त तीर्थों का माहात्म्य मुझसे कहिये ॥ ९ ॥ क्षेत्रों का फल तथा सम्पूर्ण क्षत्रों के मध्यमें हे मुनीश्वर ? श्रेष्ठश्रेष्ठता का भाव कहिये ॥ १० ॥ इसी प्रकार

तवांस्तत्रचोवाससतदामुनिः ॥७॥ तमासीनंततोदृष्ट्वाऋषयस्तेमुनीश्वराः । ऊचुः प्राञ्जलयस्सर्वे सर्वलोकसुखायवै ॥८॥ ऋषयऊचुः । भगवन्सर्वधर्मज्ञसर्वतीर्थार्थतत्त्ववित् । ततोब्रूहिसमस्तानांतीर्थानांशिवसंभृतां ॥९॥ क्षेत्राणांचफलंतावत्सूतवः कथयाऽधुना । तेषामध्येवरः कोवाक्षेत्राणाञ्चमुनीश्वर ॥१०॥ तीर्थानाञ्चतथा ब्रूहियतस्त्वंव्यासशासिनः । इत्येवञ्चदतान्तेषामृषीणामग्रतस्तथा ॥११॥ समारभतवक्तुंगुह्यंतैःप्रष्टुमुत्तमम् ॥ सूतउवाच ॥ शृणुध्वम्मुनयःसर्वेसंयतात्मानएवहि ॥१२॥ तीर्थानांक्षेत्रराशीनांमध्येश्रीपुरुषोत्तमः । गुह्यःसर्वतमोध्वंसीसर्वपुण्यफलप्रदः ॥१३॥ आस्तिशर्मप्र

तीर्थों का भी माहात्म्य मुक्ष लोगों के सामने कहिये ॥ ११ ॥ सूतजी बोले हे शौनक ? सावधान चित्त होकर सुनो ॥ १२ ॥ सम्पूर्ण क्षेत्रों के मध्यमें पाप ताप के नाश करनेवाला श्रीपुरुषोत्तम क्षेत्र है ॥ १३ ॥ काले पर्वत से विभूषित कल्याणप्रद ऋषि

कुली नदी से लेकर वैतरणी नदी तक भी मुनिपुंगव ! समुद्र के उत्तर महानदी के दक्षिण दश योजन के विस्तार मे यह उत्तमोत्तम श्रीजगन्नाथ क्षेत्र है ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ यह क्षेत्र पद पदमें श्रेष्ठतम है नलिाचल पर्वत तक यह भुक्ति मुक्ति का देने

दश्चैवनीलभूधरभूषितः । ऋषिकुल्यांसमासाद्ययावद्वैतरणीनदीं ॥ १४ ॥ तावत्क्षेत्रस्यमाहात्म्यं वर्ततेमुनिपुङ्गवाः। समुद्रस्योत्तरंतीरंमहानद्याश्चदक्षिणम् ॥१५॥ तटमारभ्यतत्क्षेत्रंराजमानंचपावनम् । वर्ततेतत्समारभ्यसमन्ताद्दशयोजनम् ॥१६॥ पदेपदेश्रेष्ठतमंतत्क्षेत्रंवर्ततेऽनघ । तन्नीलाचलपर्यन्तंभुक्तिमुक्तिफलप्रदम् ॥१७॥ तत्रगन्तुंसमर्थास्तेयेवै भक्ताजनार्द्दने । ये वै वैतरणीतीरेस्नात्वावैभक्तिसंयुताः ॥१८॥ गदाक्षेत्रेऽपिनांदेवींविरजांतटवासिनीम् । दृष्ट्वातेमनुजायोग्याश्चैकाग्रवनकानने ॥१९॥ तत्रचैकाग्रविपिनेनीलकंठंमुनीश्वराः । स्नात्वाबिन्दुह्रदेरम्येदृष्ट्वातंशिवमु

वाला है ॥ १७ ॥ जो पुरुष वहां जाकर वैतरणी नदी में स्नान करता है वह अति योग्य गिना जाता है ॥ १८ ॥ जो पुरुष गया क्षेत्र में जाकर विरजा देवी का दर्शन करते हैं वे भी अति योग्य हैं ॥ १९ ॥ जो पुरुष एकान्तमें जाकर नीलकण्ठ

महादेव का दर्शन करते हैं और विन्दुह्रद में स्नान करते हैं वह अति उत्तम हैं ॥ २० ॥ जो पुरुष पवित्र सूर्यक्षेत्र में और चन्द्रभागानदी के जलमें स्नान करके सूर्यभगवान के दर्शन करते हैं वह जन्मजन्मान्तर के पापों से मुक्त हो जाते हैं ॥ २१ ॥ २२ ॥ पांच कोश में विस्तृत शंखाकार अति सुमनोहर पापराशि के नाश करनेवाला समुद्रके जलमें गुप्त शंखोदर तीन कोश से प्रथम

त्तमम् ॥ २० ॥ तेचमर्त्यास्तथायोग्याःकार्णाकपरिलोचने । अर्कक्षेत्रपवित्रेऽस्मिन्चन्द्रभागानदी जले॥२१॥ स्नात्वायेसूर्य्यमत्युग्रंपश्यन्तिमुनिपुङ्गवाः।क्षीणपापाश्चतेमर्त्याःक्षेत्रंश्रीपुरुषोत्तमम् ॥२२॥ द्रष्टुंसमर्थाः शिवदंपावनंधरणीश्वराः । पंचक्रोशायतियुतंशंखाकारंमनोहरम् ॥ २३ ॥ नीलाचलसमुल्लासं पापराशिविनाशनम् । समुद्रोदकसंगुप्तंश्रीमच्छंखोदरं शुभम् ॥ २४ ॥ क्रोशत्रितयसंस्पृष्टंपश्यतांपापनाशनम् । नानातीर्थसमायुक्तंकोटिब्रह्मांडदुर्लभम् ॥ २५ ॥ गन्तुंसमर्थास्तेसर्वेये वैभक्त्याजनार्द्दने । तत्क्षेत्रस्पर्शतोविप्रास्समुद्रस्तीर्थराट्स्मृतः ॥२६॥ क्रोशत्रितययुक्तेचशंखाका

देखनवालों के पाप का नाश करनेवाला अनेक तीर्थों से युक्त ब्रह्माण्ड मे दुर्लभ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ जो विष्णुभगवान में भक्ति करके जाते हैं वह अति धन्य है ॥ २६ ॥ उसी तीन कोश में विस्तृत शंखाकार मनोहर नीलपर्वत से सुशोभित पुरुषो

त्तमक्षेत्र में ॥ २७ ॥ रोहिणीनामक कुण्ड है जिसके दर्शन से पापनाश हो जाते हैं ॥ २८ ॥ भो विप्राः ! उसी जलमें ब्रह्माका प्रलय होता है उसी के किनारे विष्णुरूप कल्पवृक्ष है ॥ २९ ॥ उसी की छाया में रत्नसिंहासन में स्थित नीलमाधव भगवान

रेमनोहरे । पुरुषोत्तमक्षेत्रेचनीलभूधरभूषिते ॥ २७ ॥ तत्रनीलाचलेकुण्डेरोहिणीनामभूसुराः ।
कारुण्योदकसंपूर्णां पश्यतां पापनाशकम् ॥ २८ ॥ यज्जलेनैवभोविप्रा ब्रह्मणःप्रलयोभवेत् ।
तत्तीरेकल्पवृक्षोस्तिमाक्षाद्विष्णुस्वरूपभाक् ॥२९॥ स्पृश्यतांपश्यतांवापिच्छायातलनिवासिनाम् ।
ब्रह्महत्यादिपापघ्नोवर्ततेमुनिपुङ्गवाः ॥ ३० ॥ तन्मूलमंजुलेरत्नभूषितेऽतिमनोहरे । रत्नसिंहास-
नेरम्येभासतेनीलमाधवः ॥ ३१ ॥ उभयोः पार्श्वयोः विप्राधरालक्ष्मीश्चसंस्थिता । शतहस्तप्रमा
णेनवृक्षस्यानिलकोणतः ॥ ३२ ॥ तत्रास्तेधरणीदेवादेवराजःसमाधवः । तस्यमाधवदेवस्यदक्षि

हैं जिनके दोनों ओर पृथ्वी और लक्ष्मी स्थित हैं वहां से एक सौ हाथ की दूरीपर देवराज (इन्द्र) नरकेसरी ब्रह्मस्वरूप स्थित हूं इनके सामने जो कोई पाप या पुण्य कर्म करता है वह कोटि गुणा आदिक होता है ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥

॥ ३५ ॥ सम्पूर्ण कामनाओं के देनेवाले क्षत्रपाल और विमलादेवी वहीं पर स्थित हैं ॥ ३६ ॥ आदिशक्ति भोग मोक्ष के देने वाला मणिकार्णिका तीर्थ वहीं पर है ॥ ३७ ॥ वहांपर कपालमोचन महादेव दर्शन पूजन करनेवालों के पापनाश करनेवाले

णेनरकेसरी ॥ ३३ ॥ साक्षाद्ब्रह्मस्वरूपोऽस्तिहिरण्यकशिपोरिपुः । एतस्यपुरतोविप्रस्त्वाकल्पतरुमूलकम् ॥ ३४ ॥ यत्किञ्चित्कुरुतेकर्मकोटिकोटिगुणंभवेत् । किञ्चिदन्तरतस्तस्यनृसिंहस्यपरात्मनः ॥३५॥ कामाक्षः क्षेत्रपालोऽस्तिसर्वकामफलप्रदः ।तृतीयावर्तगादेवीविमलावर्ततेऽमला ॥३६॥ शक्तिराद्यासमस्तानाम्भुक्तिमुक्तिप्रदायिनी । द्वितीयावर्ततेश्रीमत्तीर्थंतुमणिकर्णिका ३७ कपालमोचनंनाम तत्समीपेमहेश्वरः । पश्यतांजुषतांवापिब्रह्महत्यादिपापहा ॥३८॥ समुद्रस्यतटे रम्येयमएवइतीरितः । नारायणेश्वरःश्रीमान्शिवोऽस्तिविजितेन्द्रियः ॥३९॥ पश्यतामर्चकानां

स्थित हैं ॥ ३८ ॥ समुद्र के किनारे यह स्थित है दर्शन पूजन करनेवालों को कोटि लिंग पूजन के फल को देनेवाले है वहींपर विष्णु और यमके मध्यमें चामुण्डादेवी स्थित हैं ॥ ३९ ॥ ४० ॥ चामुण्डा के आगे कालिका देवी है कल्पवृक्ष समुद्र के किनारे

और कालिकादेवी इत्यादि २ दहिने बायें तरफ वृक्ष के अनन्त फल के देनेवालों क्षेत्र हैं । ४१ ॥ ४२ ॥ वहींपर संसार के पवित्र करने वाली गंगाजी हैं जिनके ध्यान करने से इन्द्रिय भगवान को जीत लेती हैं ॥ ४१ ॥ वहींपर दक्षिण तरफ मत्स्या-

यःकोटिलिंगफलप्रदः। तस्यविष्णोर्यमेशस्यच्चामुंडा मध्यवर्तिनी ॥४०॥ चामुण्डायाः पुरोभागेकालिकावर्ततेऽनघः। विष्णोःकल्पतरो श्चैवमसुद्रान्तिकमुत्तमम् ॥४१॥ चण्डरूपीकालिकयोःपुरपृष्टस्थलाश्रयः। दक्षिणः पार्श्व एवस्यादनन्तफलदायकः ॥४२॥ एतद्दक्षिणपार्श्वेऽपिसागङ्गालोकपावनी। वर्ततेमनसाध्यात्वाहारिंजिततरेन्द्रियाः ॥४३॥ तस्याश्चदक्षिणेभागेमत्स्यरूपीजनार्द्दनः। श्वेतरूपधरःशम्भुर्वर्ततेचमहीसुराः ॥४४॥ तस्याविष्णोर्मृडेशस्यमध्यंपरमपावनम् । मुक्तिप्रदंस्थलंतावद्धदन्तिकृतिनःसदा ॥ ४५ ॥ तद्गङ्गाजलतः स्नात्वामत्स्यश्वेता ऽवलोकनात्। सर्वपापाविनिर्मुक्तो

वतार भगवान् और श्वेत रूपधारी महादेव स्थित हैं ॥ ४४ ॥ महादेव और विष्णु के मध्यका स्थान मुक्तिपद कहाता है ॥ ४५। जो कोई गंगाजी में स्नान करके मत्स्यावतार भगवान और महादेव का दर्शन पूजन करता है वह सम्पूर्ण पापों से छूटकर वा-

जपेययज्ञ के फल को प्राप्त करता है ॥ ४६ ॥ यदि मनुष्य से वहांपर पाप भी हो जाय तो गंगा के स्नान और महादेव विष्णु के दर्शन से वे पाप नष्ट हो जाते हैं उसी वरगद के निकट वटेश महादेव भोग मोक्ष के देनेवाले स्थित हैं ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ बरगद के सामने मंगलादेवी और दहिने तरफ दक्षिणानन गणेशजी भो द्विज ! संसार में विघ्ननाशके लिये स्थित है जिनके

वाजपेयफलंलभेत् ॥ ४६ ॥ महाप्रसादेष्वज्ञानादपराधोभवेत्पदे । तज्जलाप्लवनात्तावन्मत्स्यश्वेताङ्गलोकनात् ॥४७॥ नश्येत्तत्क्षणमेवायमपराधान्महीसुर । वटमूलेवटेशोऽस्ति भुक्तिमुक्तिप्रदो हरः ॥ ४८ ॥ तदग्रेमङ्गलाभातिद्वितीयाशक्तिरुत्तमा । वटस्यदक्षिणेभागेगणेशोदक्षिणाननः ॥४९॥ सर्वविघ्नविनाशायलोकानांजृंभतेद्विजाः । तद्विलोकनमात्रेणसर्वकामफलंलभेत् ॥ ५० ॥ नीलभूधरपूर्वेऽपिशक्तिरस्तिमरीचिका । ऐशान्यांश्वरएवास्तिविरूपाक्षोजगद्गुरुः ॥५१॥ जनानामर्चकानांयः सर्वकामफलप्रदः । अर्धाशिनीतथालम्बाकौबेरदिशिसंस्थिता ॥ ५२ ॥ कपालमोचना

दर्शन से सम्पूर्ण कामना प्राप्त होती है ॥ ४९ । ५० ॥ नीलपर्वत के पूर्व तरफ मरीचिकादेवी और ईशानमें विरूपाक्ष महादेवजी पूजन करनेवालों को कामनादेनेवाले हैं उत्तर दिशामें अर्धाशिनीदेवी स्थित हैं ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ हे शौनक ! कपालमोचन

से अर्धाशिनीदेवी के और शंख के मध्यमें भोग मोक्ष के देनेवाला छिपाहुआ उत्तमोत्तम क्षेत्र है ।। ५३ ।। शंख के आगे नीलकण्ठ महादेव और सर्वमंगला देवी स्थित हैं ।।५४।। यही शंखका प्रमाण है बरगद के वायुकोण में महातपस्वी मार्कण्डेयजी वर्तमान है वहींपर मार्कण्डेय करके निमित्त मार्कण्डेयतालाव है ।। ५५ । ५६ ।। मार्कण्डेयतालाव में स्नान करके जो पुरुष महा-

रम्ययावदर्धाशिनीद्विजाः । मध्यंशंखस्यहरिणांगुप्तंभुक्तिप्रदायकम् ।।५३।। वर्ततेनीलकण्ठस्तुशंखाग्रेसर्वमङ्गला । शंखपृष्ठेनिवासोऽऽस्यास्तत्क्षेत्रपरिरक्षणे ।। ५४ ।। एवंशंखस्यतस्यैवंप्रमाणंकथितबुधाः । वटस्यवायुकोणेऽपि मार्कण्डेयोमहातपः ।। ५५ ।। लिङ्गरूपधरः श्रीमान् वर्ततेपुरुषोत्तमे । मार्कण्डेयह्रदेविप्राः पावनस्तेननिर्मितः ।। ५६ ।। तत्रस्नात्वाशिवंदृष्ट्वातेनार्चितमनुत्तमम् । येनभक्त्यानरः क्षिप्रंवाजपेयफलंलभेत् ।। ५७ ।। एतादृशम्महाक्षेत्रनानातीर्थसमन्वितम् ।वर्ततेभारतेवर्षेयत्रश्रीनीलमाधवः ।। ५८ ।। स्वर्गागतैःसुरैःसर्वै

देवजी के दर्शन करता है उसको वाजपेय यज्ञ का फल मिलता है ।। ५७ ।। जहांपर श्रीनीलमाधव विष्णु हैं वहांपर इस भारतवर्ष में अनेक तीर्थों से युक्त महाक्षेत्र है ।। ५८ ।। हे शौनक ! स्वर्ग से आकर देवता गन्ध पुष्प आदि उत्तमोत्तम सामग्री से

अहर्निश नीलमाधव विष्णुका पूजन करतीं हैं ॥ ५९ । तो मनुष्यों की क्या गणना है देवता लोग जिनके पूजन में लगे रहते हैं ॥ ६० ॥ क्षेत्र के पश्चिम दिशामें सरोवरोंके स्थान उन्हीं में कोई श्रेष्ठ शबर विश्वावसुनामक निर्माल्य को भगवान् के स्थानसे ले

रर्चितोदिव्यवस्तुभिः । प्रत्यहङ्कमलाकान्तागन्धपुष्पादिर्भिद्विजाः ॥ ५९ ॥तत्रविप्रामनुष्याणां सञ्चारो नास्तिभूतले । माधवस्यार्चनसक्तादेवाःकेवलमुत्तमम् ॥ ६० ॥ क्षेत्रस्यपाश्चिमेदेशेवर्त-तेशबरालयः । तत्रस्थः शबरः कश्चित्तशबराणांवरोद्विजः ॥ ६१ ॥ विश्वावसुर्नामतदातन्निर्मा-ल्यंसमाहरत् । नीलमाधवमूर्तेश्चविष्णोरायतनस्थलम् ॥ ६२ ॥ मार्जयेत्केवलंविप्रामार्जितस्य सुरैरपि । एवङ्गुप्ततमंक्षेत्रंवर्ततेधरणीसुराः ॥ ६३ ॥ चतुर्दशेषुलोकेषुगोपनीयंस्थलन्तुतत् । क-दाचित्तत्रभूदेवास्तृषार्तःकाकआगतः ॥ ६४ ॥ अयत्नात्माधवंदृष्ट्वारोहिणीकुण्डसंभवम् । ज-

आते भया तभीसे वह गुप्त स्थान वहांपर है ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ चौदहों लोकों में छिपाहुआ वह स्थान है वहीपर पिपासा से पीडित एक कौवा आया ॥ ६४ ॥ उसने उसी रोहिणीकुण्ड में जल पिया और माधव भगवान् को देखा देखतेही झट

वह विष्णुरूपहोकर वैकुण्ठ चला गया तब यमराज अति शंका में पडे ॥ ६६ ॥ यमराज ने निज अधिकार क्षय देखकर भगवान् की स्तुति किया भगवान् ने लक्ष्मी की तरफ़ देखा लक्ष्मी जी संकेत पाकर बोलीं ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ हे यमराज ! पवित्र इस

लंपीत्वाविमुक्तात्माशंखचक्रगदाब्जधृक् ॥ ६५ ॥ संप्राप्यहरिसारूप्यंवैकुण्ठंप्रतिनिर्ययौ । ज्ञात्वैवंभास्करिस्तत्रसहसागत्यशंकितः ॥ ६६ ॥ अधिकारक्षयंज्ञात्वामाधवमस्तुतवान्यमः । माधवस्तस्य भोविप्रास्तवमाकर्ण्यदुर्लभम् ॥ ६७ ॥ ईषद्धासमुखः श्रीमान्लक्ष्मीमैक्षतसप्रभुः। लक्ष्मीस्तदायमंप्राहस्वाधिकारक्षयात्पुनः ॥ ६८ ॥ भीतंमाधवनेत्रान्तः प्रेरिताभक्तवत्सला । लक्ष्मीरुवच । यममाकर्ण्यभोक्षेत्रपावनंपुरुषोत्तमम् ॥ ६९ ॥ अत्रात्यागाच्छरीराणां मुक्तिरेवनसंशयः । तवाधिकारः सर्वत्रछायापुत्रपुनः प्रभो ॥ ७० ॥ पंचक्रोशेमहाक्षेत्रेनास्तितेऽधिकृतिःक्षितौ ॥

क्षेत्र का माहात्म्य सुनो ॥ ६९ ॥ इस क्षेत्र के आनेवाले को मुक्ति मिलती है इसमे संशय नहीं है तुम्हारा अधिकार इस पांच कोश को छोडकर बाहर सब से है कीट पतङ्ग मनुष्य जो कोई देहधारी ॥ ७० ॥ ७१ ॥ आकाश पृथ्वी जल कहीं पर भी दे

हत्यागता है उसकी मुक्ति हो जाती है ।। ७२ ।। यहां के मरनेवाले पर तुमारा अधिकार नहीं है ।। ७३ ।। दूसरे स्थानों में तुमारा अधिकार है चाहे अन्यदेश से यहां आकर अघोर पापी मृत्यु को प्राप्त होवै उसपर भी तुमारा अधिकार नहीं है ।। ७४

कीटानांचपतंगानाम्मनुष्याणांचदेहिनाम् ।। ७१ ।। तत्रचैवतनुत्यागान्मुक्तिः स्यात्सुलभाय॰
मं । अन्तरिक्षेजलेवापिक्षितौवायत्रकुत्रचित् ।। ७२ ।। मुक्ति मृतौचजन्तूनांक्षेत्रेश्रीपुरुषोत्तमे ।
तेषुतेष्वाधिकारस्तेनास्तिनास्तियमस्फुटम् ।। ७३ ।। अन्यत्रत्वधिकारस्तेतवैक्षेत्रातमारिना ।
अन्यदेशादागतानांक्षेत्रेश्रीपुरुषोत्तमम् ।। ७४ ।। समुद्दिश्यममक्षेत्रंमार्गोचन्मरणेसाति । नास्ति॰
तेष्वधिकारस्तेमत्यंसत्यंवदाम्यहम् ।। ७५ ।। सूर्यपुत्रमहाक्षेत्रेमक्तस्नात्वामहोदधौ । विष्णुंप॰
श्यन्तियेभक्तयातेषुतऽधिकीर्तिनैव ।। ७६ ।। देशान्तरेमृतामुक्तास्तयेमुक्तिनिरीक्षिका । अन्तेवि॰

।। ७५ ।। हे सूर्यपुत्र ! जो पुरुष इस क्षेत्र में स्नान करके भक्तिपूर्वक भगवान् को दर्शन किये है उसपर तुमारा कुछ भी अधिकार नहीं है ।। ७६ ।। वह यहां से जाकर अन्य देश मे भी मर तो भी मुक्त हो जाय हे सूर्यात्मज ! ब्रह्माण्डमण्डल में इस

क्षेत्र की बराबर दूसरा क्षेत्र नहीं है ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ जिस क्षेत्र के जाने से मनुष्य जन्म मरण से छूटकर मुक्त हो जाते हैं इस प्रकार क्षेत्र में वास हे यम ! अवश्य करै ॥ ७९ ॥ वह संसारबन्धन से छूट जाता है उनका माहात्म्य मैं क्या वर्णन करूं

ष्णुशरीरंहिक्षेत्रं श्रीपुरुषोत्तमम् ॥ ७७ ॥स्वस्यनाम्नाचविख्यातं धिष्णुंसूर्यात्मजस्फुटम् । एतत्क्षेत्रसमंक्षेत्रंनास्तिब्रह्माण्डमण्डले ॥ ७८ ॥ यत्रगत्वापुनर्जन्मनमृतांजायतेयम । तस्मिन्क्षेत्रेनिवासंनैकरिष्यामिचयोवदेत् ॥ ७९ ॥ सविमुक्तोनसंदेहोभवबंधविनाशने । निवासिनांपुनस्तेषां फलंकिंवावदाम्यहम् ॥८०॥इतिलक्ष्म्यावचःश्रुत्वा भास्करिस्तुष्टमानसः। क्षेत्रोत्तमस्यमाहात्म्यंशृण्वन्निजपुरन्ततः॥८१॥ पूर्वापरार्द्धपर्यन्तमाधवोऽत्रवसेद्द्विजाः। दारुब्रह्मस्वरूपेणपरार्द्धेपरेपुनः८२ मानुषैःसहवैतत्रक्षेत्रेक्रीडतिकेशवः। क्षेत्रंतच्चमहाविष्णोर्द्धामप्रीतिकरम्महत् ॥८३॥ शक्तःकोवास्य

॥ ८० ॥ इस प्रकार लक्ष्मीजी से क्षेत्र का माहात्म्य सुनकर यमराज अति प्रसन्न हुए ॥ ८१ ॥ हे शौनक ! इस क्षेत्र में तीनों काल माधवभगवान् बास करते हैं ॥ ८२ ॥ इसक्षेत्र में दारुरूप भगवान् अपरार्ध में क्रीडा करते हैं ॥ ८३ ॥ विष्णु से प्रीति

करनेवाला क्षेत्र के माहात्म्य को वर्णन करने को पृथ्वी में किसकी सामर्थ्य है ॥ ८४ ॥ कौवा चतुर्भुजरूप धारणकर वैकुण्ठ गया, यमराज लक्ष्मीजी से क्षेत्र का माहात्म्य सुनकर पवित्र हो निज स्थान को गये, लक्ष्मीजी भी क्षेत्रके माहात्म्य को निज जनों को सुनाकर निज स्थान को गई ॥ ८५ ॥ इति श्रीउन्नावप्रदेशान्तर्गत बरौड़ाग्रामनिवासी पं० आनन्दमाधवदीक्षितात्मज

माहात्म्यंसम्यग्वक्तुंमहीतले ८४ काकोयत्रचतुर्भुजोजनिपुनःसूर्य्यात्मजःश्रीवचःश्रुत्वातस्यमहाम
हत्वमखिलं ज्ञात्वातदासोगमत् । लक्ष्म्याचापिनिजालयं निजजनोसंभाष्यचैवंपुनः क्षेत्रेश्रीपुरुषोत्त
मेह्यधिकृतौसंवारयन्मानसम् ॥८५॥ इतिश्रीसूतसंहितायांपुरुषोत्तममाहात्म्ये प्रथमोऽध्यायः ॥१॥
ऋषयऊचुः । पूर्वंसूतमाहाभाग कथितंभवतापरम् । तत्क्षेत्रंसुमहागोप्यं पावनंपरमाद्भुतम् ॥ १ ॥
नीलमाधवरूपस्यविष्णोस्तस्यपरात्मनः । देवैश्चक्रीयतेपूजानान्यैरेवकदाचन ॥२॥ पुनश्चोक्तहरे
श्चैवदारुब्रह्मस्वरूपिणः । मानवैरेवक्रीयंतेकथंतद्वक्तुमर्हसि ॥ ३ ॥ माधवःक्वगतोधीमन्केनवातत्प्र

पं० महाराजदीनदीक्षितकृत भाषाटीकायां प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

शौनकादिक ऋषि बोले कि हे सूत ! आपने प्रथम यह वर्णन किया है कि नीलमाधवभगवान् की पूजा सर्वदा देवता किया करते हैं सो हे भगवन् ! दारुस्वरूप भगवान की पूजा मनुष्य कैसे करने लगे यह गुप्त वृत्तान्त को मुझ से अवश्य वर्णन

करिंगे ? ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ माधवभगवान कहां से आये ? किस करके प्रकाशित हुये ? भगवान का क्या रूप है ? यह संपूर्ण मुझसे आप विस्तारपूर्वक वर्णन करैं ॥ ४ ॥ श्रीसूतजी बोले हे शौनक ! तुमने अच्छा पूँछा जिसके सुनने मात्रसेही भोग और मोक्ष प्राप्त होता है ॥ ५ ॥ ६ ॥ हे मुनिसार्दूल ! कल्याण के देनेवाला छिपाहुआ पवित्र चरित्र में विस्तारपूर्वक वर्णन

काशितम् । केनवासत्वरूपंवाविष्णोर्निर्मितमुत्तमम् । एतत्सर्वंयथान्यायंसूतवः कथयाऽधुना ॥४॥ सूतउवाच । साधुपृष्टंद्विजश्रेष्ठाःपृष्टंयच्चपुरातनम् ॥५॥ यस्यश्रवणमात्रेणदूरीभूतंमहत्तमः । भुक्तिमुक्तिशुभानिस्युर्यत्प्रश्नादपिभोद्विजाः ॥६॥ तच्चरित्रंपवित्रंवःकथयामिसमासतः । शृणुध्वंमुनिशार्दूलरहस्यंशुभवर्द्धनम् ॥७॥ जातःकृतयुगेविप्रःसूर्यवंशसमुद्भवः । सत्यवादीनृपश्रेष्ठःसदाचाररतःशुचिः ॥८॥ धर्मज्ञोधर्मशीलश्चविधेःपञ्चमपूरुषः । समस्तविद्यानिलयोबृहस्पतिसमोगुणी ॥९॥ शूरोवैरिविनाशीचधर्मकर्मपरायणः । ऐश्वर्यकोषवृद्धयश्चकुबेरेंद्रसमोबली ॥१०॥ षष्टिदण्डात्मकतया

करता हूं तुम सावधान होकर सुनो ॥ ७ ॥ हे शौनक ! सतयुग में सूर्यवंशी सत्यवादी राजाओं में श्रेष्ठ सदाचार में रत पवित्र धर्मज्ञ धर्मशील विद्या में निपुण शूर वीर ऐश्वर्यवान् विष्णुभक्त विप्रसेवी प्रजापालक धर्मज्ञ इन्द्रद्युम्न नामक राजा मालवदेश में

अवन्तिनामकपुर में रहता था ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ एक समय वही राजा सहित पुरोहित के देवमन्दिर
में भगवान् का पूजन करता था उसी समय में जटामण्डल को धारण किये जटिलनामक ऋषि आये ॥ १४ ॥ १५ ॥ ऋषि

विष्णुध्यानपरायण ः । वैष्णवोविप्रसेवीचपितृभक्तिपरायणः ॥ ११ ॥ प्रजापालनधर्मज्ञःसर्वदाऽति
थिपूजकः । एवंसमस्तगुणवानिन्द्रद्युम्नोमहापतिः ॥१२॥ मालवाख्येमहादेशेह्यवन्तीनामतत्पुरी ।
नानारत्नयुताभूमौसाक्षाद्यह्यमरावती ॥१३॥ तत्रवासंचकारासौनृपतिर्धर्ममन्दिरः । एकदासनृ
पश्रेष्ठःकृतवान्पूजनंहरेः ॥१४॥ देवार्चनगृहेरम्येसविप्रःसपुरोहितः । एतत्समयमालम्ब्यभगवान्ज
टिलाकृतिः ॥ १५ ॥ प्रविवेशद्धिजश्रेष्ठास्तद्भक्तिवशगोविभुः । तं दृष्ट्वासहसाराजानमस्कृत्यस
भान्तरे ॥ १६ ॥ सर्वैस्सम्मानिताचास्मैददौचासनमुत्तमम् । क्वस्थितंभवतापूर्वंव्यासतुल्योभवान्
प्रभो ॥१७॥ एवंममप्रतीतोऽसिकिमर्थमिहमागताः । अनुग्रहःकृतोमेद्याकिङ्करिष्यामहेतव ॥१८॥

को आते देखकर राजाने दंडाकार नमस्कार किया ॥ १६ ॥ आसन दिया कुशल प्रश्न पूँछा और हाथ जोडकर बोले ॥१७॥
हे महाराज ! आप कहां से आये ? आपका क्या अर्थ हैं ? मैं आपका क्या करूं ? मुझसे कहिये ॥ १८ ॥ सूतजी बोले कि

हे शौनक ! राजाके वचन सुनकर ॥ १९ ॥ ऋषिजी बोले कि हे नृप श्रेष्ठ ! सुनो श्रीपुरुषोत्तम (जगन्नाथ) क्षेत्र में नील सरीर को धारण किये नीलमाधवभगवान् हैं ॥२०॥ हे धरानाथ ! जिनका पूजन नित्यही देवता लोग किया करते हैं हम एक वर्ष वहां पर रहकर देख आये हैं ॥ २१ ॥ रोहिणीकुण्डका स्नान नीलमाधवभगवान् का दर्शन भोग मोक्ष के देनेवाला है ॥२२॥

सूतउवाच ॥ नृपस्येदंवचः श्रुत्वाजटिलः ससभान्तरे । उक्तवान्सहसाश्चर्यरोमाञ्चितवपुर्हरिः
॥१९॥जटिलउवाच॥ आकर्णयनृपश्रेष्ठक्षेत्रेश्रीपुरुषोत्तमे। नीलाचलोहिपरमस्तत्रनीलवपुर्हरिः॥२०॥
माधवोऽस्तिधरानाथप्रत्यहं देवतार्चितः । तत्रैवाहं स्थितः सम्यग्वर्षमात्रं नृपोत्तम ॥ २१ ॥
रोहिणीकुण्डसंभूते जलेस्नात्वादिनेदिने । माधवं दृष्टवान्नित्यं भुक्तिमुक्तिप्रदायकम् ॥ २२ ॥
स्वर्गादागत्यपरमैः सुरैस्तस्य दिनेदिने । पूजाविधीयतेराजन्निदं च दृष्टवानहम् ॥ २३ ॥
इत्युक्त्वाजटिलस्तस्मैराज्ञोमालांददौपुनः । माधवस्यमहाविष्णोर्भक्तानांभुक्तिदायकम् ॥ २४ ॥

जिनका पूजन देवता स्वर्ग से आकर प्रतिदिन करते हैं यह हम देख आये हैं ॥ २३ ॥ यह वचन सुनकर राजा ने ऋषि को माला पहिनाई ऋषी ने निज कण्ठ से निकालकर राजा को आशीर्वाद में पहिना दिया तब राजा इन्द्रद्युम्न बोला ॥ २४ ॥

॥ २५ ॥ किस देश में वह क्षेत्र है ? यहां से कितनी दूर है ? किस दिशा में है यह कहिये ॥ २६ ॥ यह वचन सुनकर फिर ऋषिजी बोले कि खारी समुद्र के किनारे अति रमणीक ॥ २७ ॥ ओद्र (उडिया) देश में श्रीपुरुषोत्तम जी हैं ॥ २८ ॥ नी·

कृतकृत्यतयाराजाताम्मालांपरमाद्भुताम् । संप्राप्यचपुनः प्राहजटिलंसूर्य्यवर्चसम् ॥ २५ ॥ इन्द्रद्युम्नउवाच ॥ कस्मिन्देशेऽस्तितत्क्षेत्रंकियद्दूरंचकीदृशम् । कस्यांदिशिमहाप्राज्ञकोवाध्यातवदस्वमे ॥ २६ ॥ इत्थंनृपवचःश्रुत्वापुनःप्राहजटाधरः ॥ जटिलउवाच । लवणाम्भोनिधेस्तीरे चोत्तरेऽतिमनोहरे ॥ २७ ॥ ओद्रदेशोऽस्तिविख्यातोनानातीर्थविभूषितः । तस्मिन्देशेमहाक्षेत्रेपावित्रंपुरुषोत्तमम् ॥ २८ ॥ तत्रनीलाचलेरम्येमाधवोनीलसुन्दरः । देवैःसमार्चितश्चास्तेतत्समीपेमहावटः॥ २९ ॥ क्रोशायातिपुनः श्रीमान्कल्पपादपसंज्ञकः । तस्यपश्चिमभागेऽपिनाम्नाशवरदीपकः ॥ ३० ॥ आश्रमः परमश्चास्तेशवराणांनिवासभृत् । तस्मान्नीलाचलंयावन्मार्गोस्त्येकपदी

लाचल रम्य पर्वत वहीं पर है वहीं पर देवता लोग नीलमाधव को पूजन करते हैं उसी के समीप महावट है ॥ २९ ॥ जो कल्पवृक्ष के तुल्य गिना जाता है वहींपर पश्चिम दिशा में शवर लोगों के स्थान ॥ ३० ॥ वहीं पर नीलाचलपर्वत है वहीं से एक

रास्ता माधवभगवान् के दर्शन को गई है जिनके दर्शन तथा वहां के क्षणमात्र वास करने से मनुष्य मुक्त हो जाते हैं ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ श्रीपुरुषोत्तमक्षेत्र में महापापी एक कौवा भगवान् के दर्शन करने सेही क्षणमात्र में मुक्त हो गया ॥ ३३ ॥ सो हे राजन् ! तुम वहां पर निवास करो यही मैं कहने आया था ॥ ३४ ॥ तुमारे रत्न पृथ्वी ग्राम द्रव्य सभी को विष्णुवत समझकर मैंने

नृप ॥ ३१ ॥ तंवैयेनपदागत्योमाधवस्यावलोकनम् । तत्तीरेक्षणमात्रेणमुक्तिःस्यात्परमानृप
॥ ३२ ॥ यत्रकाकोमहापापीकाकस्तदवलोकनात् । बहुनात्रकिमुक्तेनक्षेत्रेश्रीपुरुषोत्तमे ॥ ३३ ॥
निवासंकुरुभोराजन्यतस्त्वं वैष्णवाग्रणीः । प्रार्थयामिभवन्तंनोरत्नंवाभुवमेववा ॥ ३४ ॥
ग्रामं वा वसनादीन्वाद्रव्यमन्यंनृपोत्तम । वैष्णवन्त्वामितिज्ञात्वाज्ञानंवैकथितम्मया ॥ ३५ ॥
प्रकाशितंचतत्क्षेत्रंपवित्रंपरमाद्भुतम् । इत्युक्त्वाजाटिलःऽसोऽभूत्पश्यतांचसभान्तरे ॥ ३६ ॥
अंतर्हितहितंचोक्त्वासर्वेषांप्राणिनांपुरः । विस्तितोभून्नृपश्रेष्ठोव्याकुलोद्विजसत्तमाः ॥ ३७ ॥

तुमसे यह वर्णन किया है ॥ ३५ ॥ इस प्रकार वह ऋषि परम अद्भुत क्षेत्र का माहात्म्य कह करके सबके देखतेही देखते अन्तर्ध्यान हो गये ॥ ३६ ॥ ऋषि के चले जाने पीछे राजा अति व्याकुल हुआ ॥ ३७ ॥ तब पुरोहित से इन्द्रद्युम्न राजा बोले

कि हे पुरोहितजी ! आप करके मुझमें ज्ञान हुआ है और आपने अनेक यज्ञ किया इस समय जटिलने जो कुछ कहा उसको
 करना चाहिये ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ राजा के वचन सुनकर पुरोहितजी बोले मेरा भाई छोटा विद्यापति नामक है ॥ ४० ॥ ४१ ॥

 ततःपुरोधसंप्राहतन्निमित्तंससत्वरः ॥ इन्द्रद्युम्नउवाच । भोभोपुरोहितः क्षिप्रंतवानुग्रहतोपिवा ३८
संपादितामखाःसर्वेज्ञानंचपरमम्मम । इदानींजटिलेनोक्तंतत्क्षेत्रंपरिशीलय ॥ ३९ ॥ तवप्रसादा-
न्मेभक्तिर्भवितातद्विलोकनात् । नृपस्यवचनंश्रुत्वामादरंतत्पुरोहितः ॥ ४० ॥ उवाचनृपशार्दूल
मिन्द्रद्युम्नंद्विजोत्तमाः । पुरोहितउवाच ॥ भ्राताविद्यापतिर्नामकनीयोवर्त्ततेमम ॥ ४१ ॥ देश-
भ्रमणविज्ञस्तच्छीलनंभोकरोतुसः ॥ तत्रगत्वावयंसर्वेवत्स्यामः क्षेत्रसत्तमे ॥४२॥ वाजिमेधमखा-
न्कृत्वाद्रक्ष्यामोमाधवंविभुम् । इतिनिश्चित्यसहसादैवज्ञवचनात्तदा ॥ ४३ ॥ तंविद्यापतिनामा-

वह देशों के घूमने में अति चतुर है उसको भेजकर वहां का वृत्तान्त सब जान लेवैं फिर हमलोग सब चलकर वहांपर बास
कैंरेग ॥ ४२ ॥ वहीं पर अश्वमेध यज्ञ कर और नीलमाधव भगवान् को देख यह निश्चय करके ॥ ४३ ॥ विद्यापति को बुल

वाया और वहां के जाने का सम्पूर्ण वृत्तान्त कहा यह सुनकर विद्यापति अति प्रसन्न हुआ और रथ में वैठकर विचार करने लगा कि मैं इन चर्मनेत्रों करके भगवान् के दर्शन करूंगा मैं अति धन्य हुआ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ यह वचन कहकर

नंप्रस्थापयनृपोत्तम । प्राञ्जलिंसविधायाशुवन्द्यमानपुरःसरम् ॥ ४४ ॥ गच्छगच्छाद्विजश्रेष्ठंनलक्ष्यकुरुवेगतः । इत्युक्त्वासनृपस्तावन्नमश्चक्रेपुनःपुनः ॥ ४५ ॥ ततोविद्यापतिर्विप्रकृतकृत्योभवत्तदा । स्यन्दनेचोपविश्याथहृदाचिन्तितमानसः ॥ ४६ ॥ चर्मचक्षुर्द्वयेनाहंद्रक्ष्यामिपरमेश्वरम् । इत्युक्त्वासहसाविप्राः समुनिर्यामहानदी ॥ ४७ ॥ शनैःशनैर्विवेशाथशरद्वीपेमहावने । तन्दृष्ट्वाशवरश्रेष्ठोविश्वावसुरनुत्तमः ॥ ४८ ॥ नमस्कृत्यार्चयन्विप्रंफलमूलादिभिर्द्विजाः । प्राञ्जलिश्चविधेयासुबहुभाग्यमिदम्मम ॥ ४९ ॥ साक्षाद्विष्णुस्वरूपंत्वम्ब्राह्मणोऽद्यनिरीक्षितः । इत्युक्त्वा

धीरे२ महावनशरद्वीप में जा पहुंचा वहांपर शवरों में श्रेष्ठ विश्वावसु को देखते भया ॥ ४८ ॥ विश्वावसु के विद्यापति ने नमस्कार किये फल फूल मूल आदि से पूजन किया हाथ जोड बोले कि आज मेरा दिन धन्य हुआ कि साक्षात् आपके दर्शन हुय

फिर उस बनके नमस्कार किये ॥ ४९ ॥ ५० ॥ इस स्तुति को सुनकर विश्वावसु बोला हे विप्र ! आप यहां कैसे आये ? किसने आपको भेजा ? आपका क्या प्रयोजन है मुझसे आप कहिये ? ॥ ५१ ॥ यह वचन सुनकर विद्यापति बोले कि मालवदेश का इन्द्रद्युम्न राजा के ॥ ५२ ॥ पुरोहित का छोटा भाई हम हैं हमारा विद्यापति नाम है मैं राजा का भेजा हुआ यहां पर आ-

सनमश्चक्रेवनमेतच्चगद्गुरम् ॥ ५० ॥ कथन्त्वयागतोविप्रकेनवाप्रेषितोभवान् । कस्त्वद्भुतःसमा-
यातस्तथ्यंवदद्विजोत्तम ॥ ५१ ॥ विश्वावसुवचःश्रुत्वोवाचविद्यापतिर्द्विजः । विद्यापतिरुवाच ॥
मालवस्यच देशस्यचेन्द्रद्युम्नस्यभूपतेः ॥ ५२ ॥ पुरोधसः कनिष्ठोहम्भ्राताविद्यापतिस्मृतः । इन्द्र
द्युम्नेनमहताप्रेरितोभूभृताप्यहम् ॥ ५३ ॥ मार्गस्यकलनार्थंवैमाधवस्यप्रभोःपरम् । दर्शनार्थम-
हंवीरप्रेरितस्यचनिश्चितम् ॥ ५४ ॥ करिष्यतिनिवासंचराजात्रमाधवंप्रभुम् । द्रक्षिष्यतिमहा-
प्राज्ञप्रेरितोऽहंनसंशयः ॥ ५५ ॥ इत्युक्त्वाविरते विप्रतद्विद्यापतिनामके ।विश्वावसुपुनःप्राहब्राह्मणं

या हूं ॥ ५३ ॥ मार्ग देखने के लिये और नीलमाधव भगवान् के दर्शन के लिये ॥ ५४ ॥ राजा यहांपर माधवभगवान् के दर्शन के निमित्त वास करेंगे और मैं उन्हीं का भेजा हुआ आया हूं इसमें संशय नहीं है ॥ ५५ ॥ यह बचन विद्यापति से सुन

कर विश्वावसु बोला कि ॥ ५६ हे विद्यापति ! तुम प्रातःकाल होतेही देवतनु परब्रह्म माधवभगवान् के दर्शन करौगे ॥ ५७ ॥ अभी आप फल मूल आदि भोजन करैं यह सुनकर ॥ ५८ ॥ विद्यापति प्रसन्नमन बोले कि देवदर्शन के विना ॥ ५९ ॥ हम

सूर्य्यवर्चसम् ॥ ५६ ॥ विश्वावसुरुवाच ॥ विद्यापतेदेवतनुंमाधवन्देवदुर्लभम् । द्रक्षिष्यसिपरंदेवं स्वः प्रभातेनिरंजनम् ॥ ५७ ॥ फलमूलादिकंचाद्यस्वादपात्रनिशामय । विश्वावसोरिमांवाचंपूर्णानन्दरसप्रदम् ॥ ५८ ॥ श्रुत्वारोमांचिततनुः सविप्रः परमार्थवित् । तंपुनःप्राहसोनूनंदेवस्यदर्शनंविना ॥ ५९ ॥ जलमालंनगृह्णामिमांतत्रनयसत्वरम् । विश्वावसुस्तदायन्तद्वचनंदृढमादरात् ॥६०॥ श्रुत्वातस्यकरन्धृत्वामार्गेचैकपदंनयेत् ॥ यत्रनीलतनुश्चास्तमाधवोम्बुजलोचनः॥६१॥ तत्रनीत्वाऽथतंविप्ररोहिणीकुण्डवारिणी।स्नापयित्वावटच्छायांसेवयित्वापुनर्द्विजम् ॥६२॥ नी-

जल माला आदि कुछ भी न ग्रहण करैंगे मुझको आप जल्दी भगवान् के निकट ले चलैं ॥ ६० ॥ विश्वावसु यह दृढ बचन सुनकर विद्यापति का हाथ पकडकर जहां पर भगवान् हैं वहां का ले चला ॥ ६१ ॥ रास्ते में रोहिणीकुण्डके स्नान कराये फिर

वरगद की छाया में लें गया ॥ ६२ ॥ वहांपर श्यामवर्ण, कमलवत् नेत्र, पूर्णचन्द तुल्य मुखारविन्द, अनेक अलङ्कारों से सुशो
मित ॥ ६३ ॥ लक्ष्मी और पृथ्वी करके युक्त, मधुर मुसुकान से युक्त, पीताम्बर और सुन्दर हारों को धारण किये ॥ ६४ ॥
रत्नसिंहासन पर स्थित, देवतालोग पूजन कर रहे हैं, शंख चक्र गदा पद्म धारण किये चतुर्भुजरूप ॥ ६५ ॥ सम्पूर्ण लक्षणों से

लजीमूतसंकाशंविकचाम्बुजलोचनम् । शरत्पूर्णेन्दुवदनंनानाऽलङ्कारशोभितम् ॥ ६३ ॥ श्रीध-
राश्लिष्टपार्श्वन्तंहसन्तंमधुरंद्विजाः । पीताम्बरधरंचारुहारकेयूरनूपुरम् ॥ ६४ ॥ रत्नसिंहासनस्थ
न्तंदेववृन्दसमर्चितम् । शंखचक्रगदापद्मधारिणंचचतुर्भुजम् ॥ ६५ ॥ समस्तलक्षणैर्युक्तंवनमा-
लाविभूषितम् । तादृशम्माधवन्तत्रदर्शयामाससद्विजाः ॥ ६६ ॥ विद्यापतिस्ततोदृष्ट्वाप्रणम्यद-
ण्डवद्भुवि । हर्षगद्गदयावाचातुष्टावपरमेश्वरम् ॥ ६७ ॥ विद्यापतिरुवाच । नमस्तेदेवदेवशनम-
स्तेपरमेश्वर । कृतार्थोहंकृतार्थोऽहंत्वान्दृष्ट्वाद्यचसंशयः ॥ ६८ ॥ इन्द्रादिभिःसुरैर्यस्तुनारदा-

युक्त बनमाला पहिने हुये नीलमाधवभगवान् के दर्शन किया ॥ ६६ ॥ विद्यापति एतादृश भगवान् को देखकर साष्टाङ्ग प्रणाम
किया और अति आनन्द से युक्त होकर गद्गद बाणी से स्तुति करने लगे ॥६७॥ हे देवदेव! आपके नमस्कार हैं हे परमेश्वर !
आपके नमस्कार हैं आज मैं आपको देखकर कृतार्थ हुआ ॥ ६८ ॥ इन्द्रादिक देवता और नारदादिक मुनीश्वरों करके अगोचर

सो आपको मैंने देखा ॥ ६९ ॥ ब्रह्मादिक देवता जिनको नहीं देख सक्के उन परमात्मा का मैंने दर्शन किया ॥ ७० ॥ मैं आज अति कृत्यकृत्य हुआ फिर आनन्द दे. आंसू भरे हुये प्रणाम करके स्तुति करने लगा ॥ ७१ ॥ अति आनन्द से पृथ्वी में लोटने लगा अपने को कृत्यकृत्य मानकर परम भक्ति के नारायण से नाम को जपने लगा ॥ ७२ ॥ आनन्द से युक्त विश्वा-

यैर्मुनीश्वरैः । अगोचरःस्मृतौवेदेतंदेवंदृष्टवानहम् ॥ ६९ ॥ ब्रह्मावादेवदेवोवाह्यन्यदेवाश्चकेच-
न । द्रष्टुंनशक्तोयंदेवंपश्यामितमहान्विभुम् ॥ ७० ॥ कृतकृत्योऽद्यमेवाऽहंहर्षाश्रुपरिपूरितः ।
पुनः प्रणामंकृतवान्तुष्टावचपुनःपुनः ॥ ७१ ॥ विलुंठम्भुविसंहर्षात्सविप्रः सजितेन्द्रियः । जजा-
पपरयाभक्त्याकृतकृत्योऽजनिद्विजाः ७२ विश्वावसुस्ततःप्राहहर्षाश्रुपरिपूरितः । मार्गोऽतिगह-
नोविप्रदूरतश्चात्निजालयः ॥ ७३ ॥ आगन्तव्यं द्रुतिक्षिप्रं ब्रुवन्तंशवरंपुनः । विद्यापतिस्तदा.
प्राहस्थास्ये ऽहन्देवसन्निधौ ॥ ७४ ॥ गच्छत्वंत्वाद्यरात्रौमांस्थापयित्वायथासुखम् ॥ ७५ ॥

वसु बोले हे विप्र ! यहां से कुछ दूर पर घर है रास्ता अति कठिन है यहां से अब चलिये ॥ ७३ ॥ फिर आवैंगे विद्यापति बोले कि हम यहींपर देवके निकट रहैंगे ॥ ७४ ॥ आप जाइये हम आज यहींपर सुखपूर्वक रहैंगे ॥ ७५ ॥ विश्वावसु बोले

कि हे विप्र ! यहांपर व्याघ्र सिंह रहते हैं सो खा डालेंगे यह कहकर विद्यापति का हाथ पकडकर निज घर को ले गया ॥७६॥ घर में लेजाकर सुन्दर विस्तर दिया और भगवान् का प्रसाद भोजन के लिये देता भया ॥ ७७ ॥ सखा विश्वावसु से वह

विश्वावसुरुवाच ॥ सिंहव्याघ्रादयो विप्रखादायिष्यन्तिचात्रवै । इत्युक्त्वाचकरन्धृत्वा निजालय मवाप्तवान् ॥ ७६ ॥ सम्प्राप्यमन्दिरंविप्रंदत्वातस्यवरासनम् । दिव्यंविष्णोश्चनिर्माल्यंभोजनाय ददौपुनः ॥ ७७ ॥ निर्माल्यंतच्चसम्प्राप्यसाविद्यापतिरुत्तमः । सख्यंतुविश्वावसुनासाकंचक्रेतदा द्विजाः ॥ ७८ ॥ एतद्द्रव्यं महोभ्रातर्दुर्लभंदृश्यतेऽधुना । काननेऽपिकुतः प्राप्तंराज्ञामपिसुदुर्ल भम् ॥ ७९ ॥ इतिविद्यापतेर्वाणींश्रुत्वासोऽप्यब्रवीद्वचः । सायमागत्यतैर्देवैर्माधवायसमर्पितम् ॥ ८० ॥ दिव्यंनानाविधंद्रव्यंविष्णुभुक्तञ्चपावनम् । प्रातरुत्थायानिमाल्यंमानयामिदिनेदिने

भोजन पाकर विद्यापति ने कहा कि हे मित्र ! इस घोर जंगल में राजदुर्लभ पदार्थ कहां से पाया ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ विश्वावसु- ने कहा कि सायंकाल देवतालोग आकर नीलमाधवभगवान् के अर्पण करते हैं ॥ ८० ॥ हम प्रातःकाल वह दिव्य सुस्वादु

अन्न नित्य ले आते हैं ॥ ८१ ॥ और उसी से हम सकुटुम्ब जीते हैं यह वचन सुनकर विद्यापति ने ॥ ८२ ॥ झट विश्वावसु के गले से मिलकर बोले कि हे मित्र ! आज से मैंने तुमसे मित्रता कियी आज मैं भगवान् के प्रसाद खाने से और भगवान् के गुणानुवाद सुनने से अति कृतार्थ हुआ इस प्रकार विद्यापति विश्वावसु दोनोंही ने परस्पर वार्ता किया और विद्यापति

॥ ८१ ॥ बंधुभिर्ज्ञातिभिः सार्द्धंसर्वैर्जीवामिभोद्विज । इतिविश्वावसोर्वाणींश्रुत्वासधरणीसुरः
॥ ८२ ॥ तमालिंगितवान् गाढं विष्णुबुध्यामहीसुराः ॥ मित्रतां तेनवैसार्द्धं संपाद्यसचभूसुरः
॥ ८३ ॥ कृतार्थोजनिविप्रेंद्रसनिर्माल्यनिषेवणात् । क्षेत्रस्यदेवराजस्यमाधवस्यचतत्रसः ॥८४॥
महिमोत्कर्षमाकर्ण्यकृतकृत्योऽजनिद्विजाः । श्रुत्वाहृष्टतरोभूपःसोवमित्येवमब्रवीत् ॥ ८५ ॥
विद्यापतिरुवाच । त्वयासमंसखेचात्रविधयावसतिर्मया । त्वयासमंसुरेशन्तंपश्यामिचमुहुर्मुहुः ।८६।
किं सेवयामिनृपतेः किं वा कार्य्यङ्कुरुष्वतः । यन्माधवञ्चनेत्राभ्यांपश्यामिचमुहुर्मुहुः ॥ ८७ ॥

बोले ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ हे सखा ! तुमारें साथ यहां का रहना जिस प्रकार हो वह करैं यहां का वास देवतुल्य मैं देखता हूं ॥ ८६ ॥ हम क्या सेवा करैं और हम क्या कार्य करैं जिससे निज नेत्रों से माधव भगवान् को देखैं ॥ ८७ ॥

यह वचन सुनकर विश्वावसु पूर्वही का वृत्तान्त स्मरण करते हुये बोला ॥ ८८॥ इन्द्रद्युम्न राजा यहां पर वास करैंगे ॥ ८९ ॥ भगवान् की यज्ञ यहीं पर करके अति माहात्म्य को प्राप्त होवेंगे ॥ ९० ॥ हे सखा ! यह मैंने पूर्वही सुना है सो तुम जाकर

इतिब्रुवन्तन्तं विप्रं विश्वावसुरिदंवचः । उवाचसहसाविप्राः पूर्ववृत्तान्तमास्मरन् ॥ ८८ ॥
विश्वावसुरुवाच । मेवविचारयक्षोस्यामिंद्रद्युम्ननृपाः सखे । भविताक्षेत्रवर्य्येस्मिन्निवासंसकरि-
ष्यति ॥ ८९ ॥ दारुब्रह्मस्वरूपञ्चकरिष्यतिमखैःपरम् । क्षेत्रोत्तमस्यमहिमाभूशंतस्माद्भविष्यति
॥९०॥ कथापुरातनीचेतिश्रुतास्तीतिविभोसखे। अतस्त्वयाऽपिगत्वाचराजानञ्चसमानय ॥९१॥
इत्युक्त्वाचसशबरः सुष्वापनिजमन्दिरे । विद्यापतिस्तुसम्भेजेनिद्राशर्मतथाद्विजाः ॥ ९२ ॥
अथरात्रौजगत्स्वामीमाधवोभक्तवत्सलः । स्वप्ने तं दर्शनंदत्वायथादृष्टन्तथोक्तवान् ॥ ९३ ॥

राजा को यहां ले आवो ॥ ९१ ॥ यह वार्तालाप करके निज स्थान में सो रहे हे शौनक ! विद्यापति भी आनन्द पूर्वक वहीं पर शयन करते भया ॥ ९२ ॥ उसी रात्रि में जगत्स्वामी भगवान ने विद्यापति को स्वप्न में दर्शन दिया और बोले ॥ ९३ ॥

विद्यापति तुम शीघ्र जाकर इन्द्रद्युम्न राजा को यहां पर ले आवो ॥ ९४ ॥ वह यहां पर वास करेंगे तुम भी हमारी सेवा करते रहना ॥ ९५ ॥ यह कहकर निज कण्ठ से माला देकर अन्तर्ध्यान हो गये ॥ ९६ ॥ निद्राभंग हो जाने से झट

श्रीमाधवउवाच। विद्यापतेमनस्येवंविचारम्माकुरुद्विज। इन्द्रद्युम्नंचराजानंशीघ्रमत्रसमानय९४
सतुचात्रनिवासंवैकरोतुनृपसत्तमः। त्वंचात्रसर्वदाविप्रमत्सेवाञ्चकरिष्यति ॥ ९५ ॥ इत्युक्त्वा
भगवान्मालाङ्कण्ठादानीय मंजुलाम् । तस्मैदत्वाऽन्तर्हितःस्यात्स्वप्नेपिभक्तवत्सलः ॥ ९६ ॥
निद्राभङ्गेजायमानेकृतकृत्योऽभवद्विजः। नीलाचलञ्चसंप्रेक्ष्यप्रणम्यदण्डवद्भुवि ॥९७॥ विश्वावसुंच
तन्मित्रंसमालिंग्यमुहुर्मुहुः। जगामसहसाविप्रोनिजदेशंयथागतम् ॥९८॥ आयान्तंतद्विजश्रेष्ठा
श्चेन्द्रद्युम्नोमहीपतिः। आसनात्सहसोत्थायनमस्कृत्यचतंपुनः ॥९९॥ पप्रच्छपरयाभक्त्यादृष्ट्वा

हे शौनक! पृथ्वी में दंडाकार नमस्कार किया ॥ ९७ ॥ विश्वावसु मित्र से बारंवार मिलकर जल्दी से निज देश को चल दिया ॥ ९८ ॥ आते हुये विद्यापति को देखकर इन्द्रद्युम्न जी झट आसन से उठकर नमस्कार किया ॥ ९९ ॥ परम भक्ति

युक्त होकर राजाने पूंछा कि जटिलमुनि के कहने मुताबिक ॥ १०० ॥ माधव भगवान् क दर्शन प्राप्त हुये उस महाक्षेत्र में तुमने क्या २ देखा वह सम्पूर्ण मुझसे कहो ॥ १०१ ॥ विद्यापति राजा के वचन सुनकर बोले कि जिस प्रकार जटिलमुनि ने आप से कहा था उसी प्रकार विश्वावसु शवर से मित्रता करके जिस प्रकार सुना था वही मैंने देखा ॥ १०२ ॥ रात्रि में

न्माधवम्भवान् । विद्यापतेमहाप्राज्ञजटिलोक्तिःप्रमाणतः ॥१००॥ दर्शनम्माधवस्यास्यप्राप्तङ्किङ्क
थयस्वमाम् । किङ्किन्तत्रमहाक्षेत्रेदृष्टन्तद्वदमाम्प्रति ॥१०१॥ विद्यापतिरुवाच । इन्द्रद्युम्ननृपश्रेष्ठ
यदुक्तंजटिलेनवै । विश्वावसोश्चानुकूल्यात्तथादृष्टंयथाश्रुतम् ॥१०२॥ रात्रौस्वप्नेमाधवोसौदर्शनंद
त्तवान्स्वयम् । दत्तम्माम्प्रतितस्याज्ञामालांप्रीत्याचभूपते ॥ १०३ ॥ त्वय्यनुग्रहएवास्यवर्ततेभूतले
भृशम् । इत्युक्त्वासतुविप्रेन्द्रस्ताम्मालाम्भूभृतेददौ ॥ १०४ ॥ मालाम्प्राप्यकृतार्थोभून्निर्माल्यव-
रधारणात् । अत्रान्तरेमहातेजो नारदोमुनिसत्तमः ॥ १०५ ॥ प्रविवेशसभामध्येस्मरन्नाराय-

भगवान् ने दर्शन दिया और प्रीतिपूर्वक मुझको माला दिया ॥ १०३ ॥ सो हे राजन् ! आपकी कृपा मुझस को यह दर्शन प्राप्त हुये यह कहकर झट निज कण्ठ से भगवान् की दी हुई माला राजा को देदी ॥ १०४ ॥ माला को पहिन कर राजा अति

प्रसन्न हुआ इतनेही में नारदमुनि वहां पर आये ॥१०५॥ नारद को आते देखकर राजा झट उठे और दंडवत् किया ॥१०६॥
नारदजी को आसन दिया कुशल प्रश्न पूंछा और कहा कि आजही मेरा जन्म यज्ञ तप सभी सुफल हुये ॥ १०७ ॥ इस
प्रकार स्तुति करके नारद प्रति उत्तम ज्ञान राजाने पूंछा ॥ १०८ ॥ कि जिससे मेरी निवृत्ति हो जाय यह सुनकर मुनिनारद

णंपरम् । दृष्ट्वासनृपतिःश्रेष्ठः प्रणम्यदण्डवद्भुवि ॥ १०६ ॥ वरासनंददौतस्मैकृतार्थोऽहमिति-
ब्रुवन् । इन्द्रद्युम्नउवाच ॥ अद्यमे सफलंयज्ञंसफलञ्चमहत्तपः ॥ १०७ ॥ तवसन्दर्शनादेवस्वय-
मासरतोमुने । इतिस्तुत्वामुनिश्रेष्ठंपप्रच्छज्ञानमुत्तमम् ॥१०८॥ कथयप्रमासतान्प्राज्ञोविद्वान।न्नि-
र्वृतिर्भवेत् । शृणुराजन्प्रवक्ष्यामियोगानामपियद्वरम् ॥ १०९ ॥ वर्ततेयत्परिज्ञानंतवाभिलषितं
भवेत् । समुद्रस्योत्तरेतीरेवर्ततेनीलभूधरः । तत्रास्तेभगवान्देवोमुक्तिः स्याद्यन्निरीक्षणात् ॥
११० ॥ सूतउवाच ॥ नारदस्योपदेशेनजाटिलस्यतथाद्विजाः ॥ १११ ॥ विद्यापतेश्चवचसासरा-

ने कहा हे राजन् ! सुनो सबसे श्रेष्ठ में ज्ञान वर्णन करता हूं ॥ १०९ ॥ तुमारे अन्तःकरण में जो स्थित है वही कहता हूं
उत्तर समुद्र के किनारे नील पर्वत है वहीं पर भगवान् स्थित हैं जिनके दर्शन से मुक्ति प्राप्त होती है ॥ ११० ॥ सूतजी शौनक
से बोले कि हे शौनक ? नारद और जटिल मुनि के उपदेश से और विद्यापति से सम्पूर्ण समाचार सुनकर निज मंत्री को

बुलाकर कहने लगा ॥ १११ ॥ ११२ ॥ नीलाचल पर्वत में वास करने के लिये देश स्थित नगर स्थित सम्पूर्ण मेरे जनों से शीघ्रही ॥ ११३ ॥ पृथ्वी मंडल में नगारा बजवा दीजिये शुद्ध अन्तःकरण से राजा ने मंत्री से कह कर ॥ ११४ ॥ विष्णु को मन से पूजन करके दुर्गा देवी और नारद मुनि को ध्यान करके और नमस्कार करके बड़े २ घोड़ों से युक्त रथ में बैठ

जात्वरितोभवेत् । समाहूयनिजंमात्यन्तदावाचमुवाचसः ॥ ११२ ॥ नीलाचलनिवासार्थन्देश-
स्थान्नागरानपि । सर्वांश्चमामकांश्चैवत्वरयाशुमुहुर्मुहुः ॥ ११३ ॥ सर्वत्रडिंडिमध्वानंरचयक्षि-
तिमण्डले । इत्युक्त्वामन्त्रिणंराजाशुद्धान्तः करणंदृढम् ॥ ११४ ॥ हरिंसम्पूज्यमनसास्तुत्वाच-
परमेश्वरम् । स्मृत्वाभगवतीन्दुर्गान्नारदंमुनिपुङ्गवम् ॥ ११५ ॥ नमस्कृत्यपुरंचक्रेस्वयंचरथसत्त-
मम् ॥ आरुरोहाद्विजश्रेष्ठाश्चतुरङ्गबलान्वितः ॥ ११६ ॥ अवन्तिनगरस्थश्चजगामनीलभूधरम् ।
उत्तरंतीरमासाद्यमहानद्यांमनोहरम् ॥ ११७ ॥ विश्रम्यभोजनादींश्चचक्रुस्सर्वेयथासुखम् । निशांस्तु

गया ॥ ११५ ॥ ११६ ॥ अवन्ति नगर स्थित नीलपर्वत की तरफ चल दिया कुछ दूर जाने पर अति रमणीक एक नदी मिली वहीं पर भोजनादिक किया और रात्रि वहीं पर व्यतीत की ॥ ११७ ॥ ११८ ॥ प्रातःकाल होने पर राजा ने नारद

से पूंछा कि हे मुने ! यह नदी कहां से आई है और इसका क्या नाम है किस करके निर्मित है ! कहां पर जाकर शान्त हुई है यह कथा मुझ से आप वर्णन करिये ॥ ११९ ॥ १२० ॥ नारद जी बोले कि पश्चिम दिशा में विन्ध्य नामक पर्वत है वहीं

प्रापयामाससर्वेवतत्रमुदान्विता: ॥११८ ॥ ततःप्रभातेविमलेपप्रच्छनारदंपुनः। केयन्तरङ्गिणीनामकेनवानिर्मितामुने॥ ११९ ॥ कस्माद्देशादागतोऽसौकुत्रविश्रान्तमापसा। एतत्सर्वंगुरोब्रूहितत्रमेकौतुकम्महत् ॥ १२० ॥ नारदउवाच । पश्चिमस्यांदिशिश्रेष्ठोविन्ध्योनामगिरिर्नृप । वर्ततेतत्रवैब्रह्माविष्णुपादद्वयंपरम् ॥१२१॥ स्थापयित्वाचयत्तस्मात्पर्वतान्निर्गताऽप्यसौ । महानदीतिविख्यातापूर्वसागरगामिनी ॥ १२२ ॥ वर्ततेपृथिवीनाथगंगेवमुक्तिदायिनी । स्नानंयेकुर्वतेमर्त्याःभक्त्यास्यान्निर्मलेजले ॥ १२३ ॥ सप्तजन्मार्जितंपापंनश्येत्तेषांनसंशयः । इत्युक्त्वाचपुनः प्राहब्रह्मपुत्रो

पर विष्णु भगवान स्थित रहते हैं उसी पर्वत से निकली हुई है और पूर्व सागर में जाकर मिल गई है ॥ १२१ ॥ १२२ ॥ हे पृथ्वी नाथ ! गंगा इस नाम करके जगत में यह नदी प्रसिद्ध है जो कोई इसमें स्नान करता है ॥ १२३ ॥ उसके सातजन्म

के पाप नाश हो जाते हैं ॥ १२४ ॥ जहां पर यह समुद्र में जाकर मिली है वहीं पर पवित्र चक्रतीर्थ है वहां के स्नान करने से संसार में जीव फिर नहीं आता (मुक्त हो जाता है) ॥ १२५ ॥ सूतजी बोले कि हे शौनक ! ऋषि के वचन सुन कर राजा ने

महामुनिः ॥ १२४ ॥ क्षेत्रोत्तमेसमुद्रंस्यात्प्राप्नोतिराजसत्तम । एतत्संगमदेशेचचक्रतीर्थं सुपावनम् ॥ १२५ ॥ स्नानादत्रचलोकानांसंसारोनास्ति कर्हिचित ॥ सूतउवाच ॥ इतिदेवऋषे र्वाचास्सराजाधर्मतत्परः १२६ यांतथाचरदेवाथप्रविवेशाशिवालये । एकाम्रविपिनेविप्राःसर्वपापविमोचनम् ॥१२७॥ इतिश्रीसूतसंहितायांनीलाद्रिमहोदयेपुरुषोत्तममाहात्म्येद्वितीयोऽध्यायः ॥२॥ ऋषय ऊचुः ॥एकाम्रवनसंदेशान्मुनेसतुनृपोत्तम। किञ्चकारवदाक्षिप्रंश्रोतुंनस्तच्चसादरात् ॥१॥ सूतउवाच ॥

वैसाही किया फिर एक भवन में प्रवेश करते भये ॥ १२६ ॥ १२७ ॥ इति श्रीउन्नाव प्रदेशान्तर्गत बरौंडा ग्रामनिवासी पं. आनंद माधव दीक्षितात्मज पं. महाराज दीनदीक्षित कृत भाषा टीकायां द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

शौनकादिक ऋषि बोले कि, राजा एकाम्र बन में जाकर क्या करते भये सो आप मुझ पर कृपा करके कहैं ॥ १ ॥

सूतजी बोले कि हे शौनक ? राजा एकाम्र बनमें जाकर घण्टा का शब्द सुना तो नारद प्रति बोले कि ॥ २ ॥ हे मुने ? यह अति पावन एकाम्र बन किस करके निर्मित है यह मुझसे कहिये ॥ ३ ॥ नारद ने कहा पूर्वही काशी को छोड कर महादेवजी पुरुषोत्तम की सीमा के अन्त में आज भी वर्त्तमान है ॥ ४ ॥ यहीं पर विन्दुहद तीर्थ महादेव करके निर्मित हैं ॥ ५ ॥ सो

एकाम्रविपिनेतत्रघण्टादिमधुरस्वरम्।श्रुत्वापप्रच्छऋषयःसनृपोनारदंपुनः२ इन्द्रद्युम्नउवाच। एकाम्रविपिनन्नामक्षेत्रंपरमपावनम्। केनवानिर्मितंब्रह्मन्तन्मेऽव्याख्यातुमर्हसि।३। नारदउवाच। पुराकाशीजनाकीर्णासन्त्यज्यनृपतेऽधुना। पुरुषोत्तमस्यसीमान्तेवर्ततेऽत्रसदाशिवः।४। तीर्थोविन्दुह्रदोनामनिर्मितस्तेजसंभुवा। लिङ्गरूपीस्वयंभूत्वाराजतेगिरिजाधवः ॥ ५ ॥ लिङ्गङ्काशीपतेः शीघ्रदर्शयस्वनृपोत्तम। ततोनीलाचलंसर्वेगमिष्यामोवयंनृप ॥ ६ ॥ सूतउवाच ॥ नारदस्यवचः श्रुत्वाचैकाम्रवनवासिनः। कोटिलिङ्गेश्वरंशंभुमपश्यत्सर्वकामदम् ॥ ७ ॥ विष्णुंचसहसातावदनन्तपुरुषोत्त

हे नृपोत्तम ! काशीपति विश्वनाथ के दर्शन करो फिर नीलाचल पर्वत को चलैंगे ॥ ६ ॥ सूतजी बोले कि हे शौनक ! नारद के वचन सुनकर राजा ने महादेवजी के दर्शन किये और पुरुषोत्तम विष्णु की मूर्ति के भी दर्शन करके पूजन किया ॥ ७ ॥ ८ ॥

वहीं पर दानादि विष्णु की प्रीति के लिये किया और प्रातःकाल होतेही कर्म समाप्त करके चल दिया ॥ ९ ॥ १० ॥ फिर नील पर्वत के निकट जहां पर भार्गव नदी है और कपोत शान्ति के पास राजा ने प्रवेश किया ॥ ११ ॥ बिल्वेश्वर और

मं । स्नात्वाबिन्दुह्रदेतीर्थेदृष्ट्वासंपूज्यसद्विजः ॥ ८ ॥ तत्रदानादिकर्माणिविष्णुप्रीणनहेतवे ।
कृतवानवनीनाथोधर्मसंचयसत्वरः ॥९॥ ततस्तत्रद्विजवरःसराजाधर्ममन्दिरः। प्रभातेनिजकर्मा
णिसमाप्यपुनरागमत् ॥ १० ॥ नीलाचलसमीपन्तुयत्रास्तेभार्गवोनदी । कपोतेशान्तिकेविप्राः
प्रविवेशमहीपतिः ॥ ११ ॥ विल्वेश्वरस्यपर्यन्तं कपोतेश्वरतस्तथा । स्थलीमनोरमाचारुवालुका
भिश्चवेष्टिता ॥१२॥ दृष्ट्वातत्रैवनिलयञ्चक्रुस्सर्वेऽपिसैनिकाः । राजातत्रैवसंतस्थौशिवयोर्मध्यभू
स्थले ॥ १३ ॥ सूतउवाच ॥ ततोबिल्वेश्वरस्यास्यकपोतेश्वरतस्तथा । महिमानमुवाचाशुभूयम्ब्र

कपोतेश्वर के मध्य में सुन्दरी बालू युक्त स्थान है वहीं पर राजा ने स्थान किया ॥ १३ ॥ सूतजी बोले कि बिल्वेश्वर और कपोतेश्वर का माहात्म्य नारद ने राजा से वर्णन किया ॥ १४ ॥ पूर्वही हे राजन् ! पृथ्वी के भार उतारने के लिये वसुदेव के

गृह में देवकी से नारायण ने अवतार लिया ॥ १५ ॥ सोइ कृष्ण नाम से प्रसिद्ध होकर पाण्डवों के साथ यहां पर आये १६ इस तीर्थराज के स्नान करके दंडाकार नीलाचल के स्वामी भगवान को नमस्कार किया ॥ १७ ॥ कि वहीं पर कन्दरा में एक

ह्यसुतस्तथा ॥ १४ ॥ नारदउवाच ॥ वसुदेवगृहेपूर्वन्देवकीनन्दनप्रभुः । बभूवयदुवंशेऽसौभूभा रहरणोद्यतः ॥ १५ ॥ एकदापाण्डवैस्सार्द्धंयादवेश्वयदूत्तमः ॥ कृष्णः स्वयं समागत्यतीर्थराजजलेपुनः ॥१६॥ स्नात्वादूरान्नमस्कृत्यनीलाचलपार्तिप्रभुम् । माधवंदंडवद्भूयः प्राणिपत्यचतैस्समम् ॥ १७ ॥पुनरागत्यतीरेऽस्मिन्विवरंद्रष्टवानयम् । घोरराक्षससंघानाम्मार्गेन्द्र ष्टवानराधिपः ॥१८॥ मर्त्योपद्रवहेतूनांराक्षसानांत्राचान्तकृत् । बिल्वंफलंसमानीयतत्राबाद्यंसदा शिवम् ॥१९॥ पूजयित्वासभगवान्कृष्णस्तुभगवान्स्वयम् । निवारणायदुष्टानांस्थापयामासत

राक्षस को देखा ॥ १८ ॥ मनुष्यों को दुःख देने वाले राक्षस को देखकर कृष्ण ने बिल्वफल से महादेव का पूजन कर स्थापन किया ॥ १९ ॥ २० ॥ सोई इन सदा शिवके दर्शन करो और आश्चर्यित कथा हे राजन् ! सुनो ॥ २१ ॥ एक समय विश्वनाथ

काशीपति महादेवजी नीलाचल पर्वत पति विष्णु के दर्शन के लिये यहां आये और दर्शन न मिले ॥ २२ ॥ तब अति घोर तपस्या कपोत की नाई किया तब दर्शन नारायण के मिले ॥ २३ ॥ तभी से कपोतेश्वर नाम से महादेव कहे जाते हैं सो हे राजन् ! स-

न्नतम् ॥ २० ॥ तस्मादिमंशिवंपश्यसर्वकामप्रदायिनम् । अपरञ्चैतुकंराजन्शृणुदेवसदाशिवम्
॥१९॥ ॥ २१ ॥ वाराणस्याः तथापूर्वमागतोदर्शनेच्छया । निलाचलपतेर्विष्णोर्दर्शनन्तस्यनाप्तवान्
॥ २२ ॥ ततोमहत्तपः कृत्वातपसासकपोतवत् ॥ बभूवाथचिराद्विष्णुंमाधवंदृष्टवान्शिवः ॥२३॥
तस्मादयम्बभूवात्रकपोतेश्वरईरितः । संप्रत्ये तम्महाराजाशिवंन्तंशिववर्द्धनं । पश्यभूपसमस्ताना
ङ्कामनानांफलप्रदम् ॥२४॥ सूतवाच ॥ नारदोक्त्यातथाराजाकृतवान्भूसुरोत्तमाः ॥२५॥ किञ्चि
दध्वानमागत्यमार्गेजातंविशङ्कितम् । वामचक्षुर्भुजस्पन्दोजातोराजामुहुर्मुहुः ॥२६॥ तन्दृष्ट्वास ॥१९॥

म्पूर्ण कामना के देनेवाले महादेवजी के दर्शन करो ॥ २४ ॥ नारद के कहने से राजाने वैसाही किया ॥ २५ ॥ इतने ही में कुछ शब्द सुनाई दिया और राजा इन्द्रद्युम्न का बायां नेत्र व भुजा फरका ॥ २६ ॥ यह दुःशकुन देखकर राजा नारद प्रति

पूँछने लगा कि हे महामुने ? यह दुर्निमित्त कैसे हुआ ? इसका क्या फल है ? हमसे कहिये ॥२७॥ २८ ॥ नारदजी बोले कि हे नृपश्रेष्ठ ? तुमको इस समय नारायण के दर्शन होंगे ॥ २९ ॥ हे नृपश्रेष्ठ ? विद्यापति ने जिस दिन नारायण को देखा तभी

इत्थंराजासविस्मयेममुनिःपुनः । किमेतन्मेमुनेब्रूहिदुर्निमित्तङ्कथम्मुहुः॥ २७ ॥ धर्मार्थन्त्यजतः सर्वंसर्वज्ञारुतरंमम । किमकार्य्यम्भवेद्ब्रूहिसर्वज्ञत्वंयतोमहान् ॥ २८ ॥ नारदउवाच ॥ नृपश्रेष्ठम-हीपृष्ठेकुलंतेद्यभविष्यति ॥ किन्तुतेमाधवस्यास्यदर्शनम्भावितानवै ॥२९॥ यद्दिनेनृपतिश्रेष्ठविद्याप तिरसौद्विजः । अपश्यद्देवदेवन्तंसुरवृन्दंसमर्चितम् ॥ ३० ॥ तद्दिनसायमेवायंनविनाम्बुदसु न्दरं । अन्तर्हितोमाधवोभूद्भूतानाम्बरभूतले ॥ ३१ ॥ ततः सुवर्णवर्णाभिर्वालुकाभिस्समन्ततः । नीलाचलःसमाच्छन्नोविद्धेवधरणीपते ॥ ३२ ॥ सूतउवाच । इत्थंवंवदतस्तस्मादघोरंवनमुत्त

से देवपूज्य भगवान् अन्तर्ध्यान हो गये हैं ॥ ३० ॥ ३१ ॥ हे राजन् ? सुवर्णवर्ण बालू करके नीलपर्वत ढक गया है यह जानिये ॥ ३२ ॥ सूतजी बोले कि हे शौनक ! नारद के यह वचन सुनकर राजा पृथ्वी में वज्रपात की नाईं गिरपडे ॥ ३३ ॥

सब लोग हाहाकार शब्द करने लगे कुछ देर बाद जब राजा को चेत हुआ ॥ ३४ ॥ तब मुनि नारद के चरणों में गिरकर विलाप करने लगा ॥३५॥ हे मुने ! मैंने क्या जन्मजन्मान्तर में पाप किया कि जिससे माधवभगवान् अन्तर्ध्यान होगये ३६

माः । आकर्ण्यसहसाराजावज्रपातइवापतत् ॥३३॥ हाहाकारोमहानासीज्जनास्तत्रसमागताः ॥
ततः सनृपतिःश्रेष्ठोलब्धसंज्ञोतियत्नतः ॥ ३४ ॥ उत्थाप्यतरसाभूपःपपातमुनिपादयोः । विलप
न्भृशमाभाष्यमन्दभाग्योऽप्यहंध्रुवम् ॥३५॥ किंमुनेदुष्कृतंघोरंमयाजन्मनिजन्मनि । यत्कर्मपरि
पाकेनमाधवोऽदृश्यताङ्गतः ॥३६॥ इदानींयान्तुतेसर्वेदेशंममसुतान्विताः । अभिषेकंचकुर्वन्तुतत्रपु-
त्रस्यमेप्रभो ॥३७॥ त्यक्ष्याम्यत्रशरीरम्भोपुण्यक्षेत्रेपिनारद । योगेनैवमुनेशीघ्रङ्किङ्कार्यञ्जीविते
नमे ॥३८॥ सूतउवाच । इतिब्रुवन्तन्तम्भूपंविलपन्तंमुहुर्मुहुः । उवाचनारदोधीमान्विप्राःकोमलया

मैं अपने पुत्र सहित राज्य में जाकर लडके को अभिषेक करदूंगा ॥ ३७ ॥ और इस शरीर को त्याग करूंगा। जीवित रहने से क्या कार्य है ॥ ३८ ॥ सूतजी बोले कि हे शौनक ! विलाप करते हुये इन्द्रद्युम्न राजा प्रति नारद कोमल वचन बोले ३९

राजा तुम घबडाओ नहीं तुम पण्डितों में श्रेष्ठ हो धैर्य धरो ॥ ४० ॥ तुम धैर्यसिन्धु हो पृथ्वी में इन्द्र की बराबरी समझे जाते हो ज्ञानवैराग्य के स्थान हो मत घबडाओ ॥ ४१ ॥ किसलिये दीन की नाई विलाप करते हो ब्रह्मा ने मुझको तुम्हारे पास भेजा है ॥ ४२ ॥ शोक न करो धैर्य धरो जो ब्रह्मा ने कहा है वही मैं कहता हूं सुनो प्रसन्न होवो इस प्रकार शान्ति के देने

गिरा ॥ ३९ ॥ विश्राममाकुरुक्षिप्रंधैर्यञ्चभजभूपते । पण्डितानांवरस्त्वंहिवैष्णवंश्रेष्ठएवहि ॥ ४० ॥ धैर्यसिंधुस्त्वमेवासीत्क्षितौसाक्षात्पुरन्दरः । ज्ञानवैराग्यनिलयस्त्वंविधेःपञ्चमःपुमान् ॥४१॥ कथंमेतद्विलपनंकुरुषेदीनवन्नृप । तवान्तिकम्प्रेषितोऽहंब्रह्मणाब्रह्मवादिना ॥४२॥ यदुक्तन्तदहंवच्मित्यजशोकम्मुदंकुरु ॥सूतउवाच । इतिशान्तिप्रदांवाणीङ्कथयित्वापुनर्मुनिः ॥४३॥ उवाचपरया प्रीत्यानंदयन्नृपतदुत्तमाः । श्वेतद्वीपेमनोरम्येभगवान्दारुरूपभाक् ॥४४॥ आस्तेसमाधवोदेवस्त्वचैवा

वाले बचन कहकर ॥ ४३ ॥ हे शौनक ! नारद फिर कहने लगे श्वेतद्वीप में दारुरूपधारी भगवान् हैं ॥ ४४ वह माधवभगवान् तुम्हारे पर कृपा करैंगे हजार अश्वमेध यज्ञ करने से तुमको दर्शन मिल जावैंगे ॥ ४५ ॥ हे नृप ! तुम्हारेही द्वारा इस पवित्र

क्षेत्रमें नारायण स्थित किये जावैंगे ॥ ४६ ॥ यही वचन ब्रह्माने कहकर मुझे भेजा है जब तक नारायण अन्तर्ध्यान रहैंगे॥ ४७॥ तब तक हम तुमारे निकट स्थित रहैंगे यज्ञ में भगवान स्वयं रूप धारण करके ॥ ४८ ॥ तुमको दर्शन देवैंगे विश्वकर्मा इस पर्वत

नुग्रहिष्यति । वाजिमेधसहस्रेणद्रक्षिष्यतिपुनर्महीम् ॥ ४५ ॥क्षेत्रोत्तमेपवित्रेस्मिन्स्थापयिष्यामिभो
नृप । दारुब्रह्मतवद्वाराप्रकाशोभवितानृप ॥ ४६ ॥ इत्युक्त्वाब्रह्मणैवाहम्प्रेषितस्तवसन्निधिम् ।

यावदन्तर्हितेदेवेमाधवेभक्तबान्धवे ॥ ॥४७ ॥ तावदेवमहीनाथप्राप्तेऽहन्तवसन्निधिम् । पापमा
नेषुयज्ञेषुस्वेच्छयादारुरूपधृक् ॥ ४८॥ मिलितोभविनोदेवोविष्णुभक्तिवशस्तव । स्वयंरूपंचसंग
द्याविश्वकर्मावतारतः ॥४९ ॥ प्रकाशोभविताभूपसुन्दरेनीलभूधरे । तस्मिन्प्रकाशेसहमासराजाम
मसन्निधिम् ॥ ५०॥ संप्राप्यभूतलंमांचनेष्यतिप्रातिमाकृते । ततःप्रतिष्ठांसंप्राप्यविधेयाविधिनाक्षि

पर मन्दिर बनावैंगे उसी मन्दिर में ब्रह्मा करके नारायण की प्रतिष्ठा होवैंगी ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ हे राजन्द्र ! यही ब्रह्मा
नमुझसे कहकर भेजा है इससे मेरे कहे वचनों को तुम विश्वास करो ॥ ५२ ॥ हे नृप ? यहीं पर सम्पूर्ण सेना औरं सवारियों

को स्थित करदो ।। ५३ ।। अपने इष्ट मित्रों सहित आगे अति कठिन रास्ता है सो पैदल हमारे साथ चलो सूतजी बोले कि
हे शौनक ? नारद के वचन सुनकर राजा मंत्री और पुरोहित को संग में लेकर नारद को आगे करके नीलाचल पर्वत को चल

तौ ॥ ५१ ॥इत्याज्ञाप्यनृपश्रेष्ठब्रह्मणाप्रेरितोप्यहम् । कुरुविश्वासमत्रैवक्षितिपोत्तमसांप्रतम् ॥ ५२॥
इदानींसैन्यमत्रैवतथापानादिकंनृप । तिष्ठत्वत्रैवस्वस्थेनस्वात्मैर्जनगणैर्नृप ॥ ५३ ॥नीलाचलसमा
गच्छपादचारीसुमंजुलम् । शिलाकण्टकसंघैश्चविषमेगहनेपथि ॥ येनगन्तुमशक्तस्त्वंयतःपद्भ्यां
समाचल ॥ ५४ ॥ सूतउवाच ॥ ततोऽसौनृपातिर्विप्राः पुरस्कृत्यविधेःसुतम् ॥ ५५ ॥आरुरोह
गिरेरग्रंसानुगः सपुरोहितः । ततःकृष्णोगुरुतरोर्मूलेनिर्विविशुर्मुदा ॥ ५६ ॥ यत्रास्तेभयसंहर्ता
नृसिंहोभगवान्विभुः । ततःसर्वेनृसिंहंतं कोटिसूर्यसमप्रभम् ॥ ५७ ॥ शंखचक्रधरन्देवंचतुर्बाहु-

दिये और एक वरगद वृक्ष के पास गये ।। ५५ ।। ५६ ।। जहां पर भयके रहने वाले नृसिंहभगवान् कोटि सूर्य के प्रकाश तुल्य
।। ५७ ।। शंख चक्र गदा पद्म युक्त चार बाहु किरीट कुण्डल को धारण किये दांतों को कटकटाते हुयेमुख फैलाये ।। ५८ ।। शंख

कुन्द चन्द्रमा की नाई धवलवर्ण देवतों और दैत्यों करके दुर्निरीक्ष्य एतादृश नृसिंहजी को नारद के प्रभाव से सबों ने देखा ५९
नारद जी राजा से बोले कि हे नृपश्रेष्ठ ! नृसिंहजी को देखो ॥ ६० ॥ जिनके दर्शन से सम्पूर्ण अन्धकार नाश हो जाते हैं
हे नृप ! जब तक नारायण के दर्शन न होवैं तब तक तुम इन्हीं का पूजन करो यह बरगद साक्षात् विष्णुरूप है॥ ६१ ॥ ६२॥

किरीटिनम् । अट्टाट्टहासविसरदव्यात्तानसरोरुहम् ॥ ५८ ॥ शंखकुन्देंदुधवलन्दुर्निरीक्ष्यंसुरा
सुरैः । तादृशंददृशुस्तेवैनारदस्यप्रभावतः ॥ ५९ ॥ ततोनरपतिंभूयोनारदः सोप्युवाचतम् ।
पश्यदस्यनृपश्रेष्ठनरसिंहंसुरेश्वरम् ॥६०॥ यस्यसंदर्शनेनैवभस्मीभूतंभवेत्तमः । अद्यारभ्यत्वमत्रा
शुपूजयाक्षितिपोत्तम ॥६१॥ दारुब्रह्मस्वरूपस्ययावद्विष्णोश्चदर्शनम् । न्यग्रोधस्तरुरेषोयंसाक्षाद्विष्णु
स्वरूपभाक् ॥६२॥ योजनायतिमान्भूपाक्षितोभातिससर्वदा । यच्छायाक्रमणान्मर्त्यस्तथायस्याऽव

हे भूप ? यह एक योजन (चार कोस के विस्तार मे शुशोभित है जिसकी छाया में घूमने से तथा दर्शन करने से ॥ ६३ ॥
वैकुण्ठवासी भी पाप से छूट जाते है हे राजन् ! पृथ्वी में विष्णु करके नमस्कार किया हुआ वरगद (वट) वृक्ष के नमस्कार

करो ॥ ६४ ॥ इसके पश्चिम में नृसिंह जी उत्तर में नीलशरीर माधव भगवान् स्थित हैं ॥ ६५ ॥ जो प्रभु अदृश्य हैं वह तुह्मा
रे पर यहां कृपा करेंगे और चार रूप करके यहां प्रगट होंगे ॥ ६६ ॥ विष्णु के श्वेतद्वीप और जम्बूद्वीप अति प्यारा है उसीके

लोकनात् । ६३ ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तस्तैर्वैवैकुण्ठवासिनः । तंनमस्कुरुभोराजन्विष्णुवन्द्यामही-
तले ॥ ६४ ॥ प्रतीच्यामस्यवृक्षस्य नृसिंहस्योत्तरस्तथा । अत्रनीलतनुर्देवोमाधवःसंस्थितोविभुः
॥ ६५ ॥ अदृश्योयःप्रभुर्देवस्त्वमत्रानुग्रहिष्यति । चतुर्द्धामूर्तिसपन्नोभविष्यत्यत्रभूपते ॥ ६६ ॥
श्वेतद्वीपस्तथाविष्णोजम्बुद्वीपप्रियःस्मृतः । तयोर्मध्यमहाविष्णोरतिप्रीतिकरोप्यसौ ॥ ६७ ॥
यतोनानाविधंभोगंभुक्तवान्भूतभावनः । तस्मात्सभगवान्विष्णुस्तवद्वारामहीपते । प्रकाशोभावि-
तानूनम्माकुरुष्वात्रसंशयं ॥ ६८ ॥ सूतउवाच ॥ नारदेरितमाकर्ण्यसोयन्नृपशिरोमणिः ॥ ६९ ॥

मध्यमें प्रीति करनेवाले यह महाविष्णु अनेक भोगों को भोग करेंगे और तुमारे द्वारा यहीं पर प्रकाशित होंगे तुम संशय न करो
॥ ६७ ॥ ६८ ॥ सूतजी बोले कि हे शौनक ! नारद से यह बचन सुनकर राजशिरोमणि इन्द्रियजीत इन्द्रद्युम्न राजा ॥ ६९ ॥

जग, ॥२३॥

नृसिंह भगवान् का पूजन करते भया उसी समय में हेविप्र? जगत के आनन्द देनेवाली आकाशवाणी होती भई कि हे इन्द्रद्यु-
म्न ! हेमहानाथ !! ब्रह्मा की आज्ञा से मैं कहता हूं कि तुम विष्णु की प्रीति करनेवाला यज्ञ शीघ्र करो ॥ ७० ॥ ७१ ॥

माहा०

तन्नृसिंहंचसंपूज्यस्तुतवान्विजितेन्द्रियः । अत्रान्तरेद्विजवरवाणीचाकाशचारिणी ॥ ७० ॥
जातान्तरिक्षेसहसाजगदानन्दवर्द्धिनी । इन्द्रद्युम्नमहानाथब्रह्मणाप्रेरितोमुनिः ॥ ७१ ॥
तेनैवकथितंयद्वत्तत्तद्विविधभाषितम् । विष्णुप्रीतिकरान्यज्ञान्कुरुशीघ्रमहीपते ॥ ७२ ॥ प्रका-
शोभवितविष्णुस्तवद्वारानसंशयः । इत्याकाशवचःश्रुत्वासराजाभक्तितत्परः ॥ ७३ ॥ अतिहृ-
ष्टाबभूवाशुतदेवाधिजितेंद्रियाः । नारदोक्तिर्यथाजातातथैवाकाशवागपि ॥ ७४ ॥ अतोविष्णो-
रसावाज्ञाराज्ञेत्येवंविचिन्तितम् । सूतउवाच । नारदस्तंपुनःप्राहक्षितिपानांवरंद्विजः ॥ ७५ ॥

॥ ७२ ॥ तुह्मारे ही द्वारा विष्णु यहां पर प्रकट होंगे यह आकाशवाणी सुनकर भक्तितत्पर होकर राजा ॥ ७३ ॥ जिस
प्रकार नारदने कहा वही आकाशवाणी ने कहा सुनकर अति प्रसन्न हुआ ॥ ७४ ॥ और आकाशवाणी का विचार करने ल

॥२३॥

गा सूतजी बाल कि हे शौनक ! नारदजी फिर राजा से बोले ॥ ७५ ॥ हे नृप ! जहांपर नीलकण्डजी स्थित है वहां अब तुम चलो नीलकण्ठ के दाक्षिण तरफ ब्रह्मा जी के पहिले का बनाया हुआ ॥ ७६ ॥ तुमारे लियें नारासिंहक्षेत्र है वहा पर तुम मं-

नीलकण्ठोऽपियत्रास्तेव्रजतत्रनृपाऽधुना । दक्षिणेनीलकण्ठस्यब्रह्मणानिर्मितंपुरा ॥ ७६ ॥ नारसिंहन्तुतत्क्षेत्रंतवाश्वमेधनिर्मितौ । तत्क्षेत्रपुरतोराजन्प्रासादंरचयाऽधुना ॥ ७७ ॥ प्रत्यङ्-मुखम्मनोरम्यंप्राकारद्वयलांछितम् । सर्वापद्विघ्नसंहाररंराक्षसानांविनाशनम् ॥७८॥ नृसिंहंस्था पयत्वद्यद्वीपाद्वीपान्तरयंथा । चन्दनद्रुममूलंवैतत्क्षेत्रन्नृपसत्तम ॥ ७९ ॥ शतधन्वन्तरंवि-द्धिब्रह्मणानिर्मितम्परम् । शीघ्रङ्गच्छनृपश्रेष्ठस्थास्येहंपंचवासरम् ॥ ८० ॥ कार्यासिद्ध्यर्थमेवाहन्त्वांहिगच्छनराधिप । इत्याज्ञयानारदस्यसनृपः सहसागमत् ॥ ८१ ॥ यत्रास्तेतसैन्यमात्मीयंनी-

न्दिर को अभी बनघाओ ॥ ७७ ॥ और उसीमें राक्षसोंके विनाशक नृसिहजी को स्थित करो ब्रह्मां करके बनाया हुआ एक सौं धन्वा के विस्तार में वह क्षेत्र है वहां शीघ्र तुम जावो मै यहां स्थित रहूंगा ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ कार्यासिद्ध के लिये

तुम शीघ्रही जावो यह नारद की आज्ञा सुनकर राजा चलदेते भये ॥ ८१ ॥ नीलकण्ठ के निकट जाकर अति उत्तम मन्दिर का ॥ ८२ ॥ विश्व कर्मा के पुत्र से बनवात भया और प्रतिष्ठा के लिये साम्ग्री इकट्ठा करके विधिपूर्वक मान्दिर की प्रतिष्ठा नारद सहित

लकण्ठान्तिकेमुदा । ततोगत्वानृपश्रेष्ठःकारयामासशोभनम् ॥ ८२॥ प्रसादंसहसागत्यविश्वकर्मा-
त्मजेनवै । प्रतिष्ठार्थम्महाप्राज्ञः सनृपोधरणीसुरः ॥ ८३ ॥ सम्भारांश्चतदाचक्रेभृशंक्षितिपुर-
न्दरः । ततोगत्वानृपश्रेष्ठोज्ञानामृतमहोदधिः ॥ ८४ ॥ विधिनातत्प्रतिष्ठाचसंपाद्यद्विजपुंगवाः ।
प्रासादेशर्मदेरम्येस्थापयामासतंविभुम् ॥ ८५ ॥ नृसिंहन्दैत्यराजस्यमहोरस्थलदारितम् । द्वी-
पाद्वीपान्तरामिवमहोत्मवतयाद्विजाः ॥ ८६ ॥ स्थापयित्वाचतन्देवसम्पूज्यस्तुतवान्मुनिः । इन्द्र-
द्युम्नोपिभूपोसौसमभ्यर्च्यस्तुतवान्तथा ॥ ८७ ॥ सूतउवाच । तंभूपंपुनरेवाह नारदोमुनिसत्तमाः

किया और नारायण का स्थापनकर भगवान को इन्द्रद्युम्नने अनेक प्रकार से स्तुति किया ॥ ८३ ॥ ८५ ॥ ८७ ॥ सूतजी शौनक से बोले कि नारदजी राजासें फिर बोले कि हे राजन । अति दिव्य एकयज्ञशाला करो ॥ ८८ ॥ इसमे

अश्वमेधयज्ञ होगा यह आज्ञा पाकर राजा ने यज्ञसामग्री और यज्ञशाला बनवाई ॥ ८९ ॥ समस्त ऋषियों को बुलाकर यज्ञ होने लगी और विष्णु के तेजसे अति प्रकाशमान् राजा शुद्ध अन्तःकरण होकर सूर्यकी भांति प्रकाशित होने लगा ॥ ९० ॥

शालांकुरुदृढान्दिव्यांविशालांचविशांपते ॥ ८८ ॥ वाजिमेधसहस्रस्ययत्तत्कर्मभवेन्नृप । मखभाशंश्चसम्पाद्यनारदोक्त्याकरेद्विजाः ॥ ८९ ॥ विष्णुतेजोनृपस्यास्यशरीरोजनिदुर्द्धरम् । शुद्धान्तःकरणोराजासूर्यवत्प्रस्फुरद्वपुः ॥ ९० ॥ शुद्धसत्वतयारेजेमुनयोनयविन्नृप । शून्यास्त्वेकपदाविप्राःसप्तरात्रस्यपूर्वतः ॥ ९१ ॥ तृतीयप्रहरान्तेसौनक्तंविष्णुंददर्शह । फलपुष्पादिसंयुक्तंसर्वलक्षणलक्षितम् ॥ ९२ ॥ क्षीराम्भोनिधिमध्यस्थंशंखचक्रादिचिन्हितम् । मांजिष्ठवर्णललितंदिव्यगंधोत्करस्फुटम् ॥ ९३ ॥ एतादृशङ्कल्पतरुन्दृष्ट्वातन्धरणीधवः ॥ ९४ ॥ तन्मूलमणिभिर्दिव्यैरार्चि-

मुनि भी प्रकाशितहुए एकदिन रात्रिमें ॥ ९१ ॥ तीसरे प्रहरके बाद स्वप्नमें विष्णु को राजा देखते भये ॥ ९२ ॥ किस प्रकार कि फल फूल आदिसे युक्त क्षीरसमुद्र के किनारे शंख चक्र आदिक चिन्हों से चिन्हित सुन्दर सुगान्धियुक्त ॥ ९३ ॥

कल्पतरु के नीचे सुवर्ण के सिंहासनपर पीतांबर पहिने कछनी काछे बनमाला पहिने दहिने तरफ लक्ष्मीयुक्त लक्ष्मी के
जग, दहिनी तरफ हल मूसल शंख बायीं तरफ चक्र कोटि चन्द्र की आकृतियुक्त दिव्य २ ऋषि और देवताओं से पूजित इस माहा

तेहेममण्डपे । रत्नसिंहासनेदिव्येलसन्तंविष्णुमव्ययम् ॥ ९५ ॥ नीलजीमूतसङ्काशंवनमाला-
॥२६॥ विभूषितम् । नानामण्डपसंयुक्तन्दक्षपार्श्वेश्रियायुतम् ॥ ९६ ॥ तद्दक्षिणेदलन्नीलचेलमंजुलमव्य-
यम् । हलंचमुसलञ्चैवशंखंचक्रन्तथाद्विजाः ॥ ९७ ॥ दधानङ्कोटिचन्द्राभंछत्रीकृतफणीश्वरम् ।
चक्रंचवामभागेऽपिसर्वज्ञानमयन्द्विजाः ॥ ९८ ॥ दिव्यर्षिभिस्तूयमानंसुरवृन्दैःसमर्चितम् ।
एवंविधंहरिंस्वप्नेदृष्टवान्धरणीपतिः ॥ ९९ ॥ अदृष्टपूर्वन्तन्दृष्ट्वासनृपः श्रद्धयान्वितः । स्वप्ने-
बहुविधैस्तोत्रैःस्तुतवान्परमेश्वरम् ॥ १०० ॥ ततोनिद्रावसानेऽसौकृतकृत्योऽभवत्तदा । यज्ञमे- ॥२५॥

प्रकार के हरि नारायण को देखते भये ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ स्वप्न में नारायण को देखकर इन्द्र
द्युम्न राजा अनेक स्तोत्रों करके स्तुति करने लगा ॥ १०० ॥ इतनेही में चट आंख खुल गई राजा ने अपने को अति

धन्य मान विष्णु की मूर्ति को मन में ध्यान करते सूतजी शौनक से कहते हैं कि नारद के आगे ॥ १०१ ॥ १०२ ॥ जो स्वप्नमें देखा था वही गंभीर बाणी से कह दिया नारद सुनकर राजापति बोले ॥ १०३ ॥ हे राजन्! तुह्मारे सम्पूर्ण यज्ञादिक सफल हुये समस्त शोक तुमारे नाश हो गये तुम पर नारायण प्रसन्न हैं ॥ १०४ अब तुमको प्रातःकाल होतेही दारुरूप भगवान्

सफलाजातायतोविष्णुमपेक्षितः ॥ १०१ ॥ इतिसञ्चिन्त्यमनसातन्मुर्तिम्भावयन्मुहुः ॥ सूतउवाच । ततःसनृपशार्दूल नारदस्याग्रतःपुनः ॥ २ ॥ स्वप्नेदृष्टंचयद्विप्राःप्राहगम्भीरयागिरा । तच्छ्रुत्वानारदःश्रीमान्पुनराहमहीपतिम् ॥ ३ ॥ सर्वंयज्ञादिकङ्कर्मसफलन्तेद्यभूपते । शोकस्तेविगतः श्रीमान्प्रसन्नः सोच्युतस्त्वयि ॥ ४ ॥ अथारुणोदयेकालेदारुरूपंजगत्पतिम् । द्रक्ष्यसिपरन्देवंभूपसत्तमसाम्प्रतम् ॥ ५ ॥ दृष्ट्वाकृतार्थोभूर्लोकेभविष्यतिनसंशयः । ततःप्रभातेविमलेविधिनास्नातुमुद्यतः ॥६॥ महोदधिङ्गतःश्रीमान्द्विजाःसनृपकुंजरः । नारदेनसमस्तत्रदेव-

के दर्शन मिलैगें ॥ १०५ ॥ देखकर तुम कृतार्थ हो जावोगे और प्रातः काल होतेही राजा झट उठकर स्नान करने को उद्यत हुआ ॥ १०६ ॥ नारद सहित राजा समुद्र में स्नान करने गया वहांपर देवद्रुम कल्पवृक्ष को देखा ॥ १०७ ॥ जिस प्रकार

श्वेतद्वीप में हे विप्र ? भगवान् चिन्हित रहते हैं वैसेही लक्षणों से युक्त देखा ॥ १०८ ॥ राजा ने नारद को दिखाया नारद हस
कर बोले ॥ १०९ ॥ हे नृपश्रेष्ठ ! यह तुह्मारे भाग्य का फल है जो विष्णु श्वेतद्वीप में रहते हैं उन्हीं को तुमने देखा ॥ ११०॥

द्रुममलोकयत् ॥ ७ ॥ यथास्वप्नेऽपिभोविप्राः श्वेतद्वीपेमनोरमे । तथासदृष्टवान्चिन्हैस्तादृशैरे-
वलक्षितम् ॥ ८ ॥ तन्दृष्ट्वानारदंराजादर्शयामासहर्षतः । ततोदेवस्वरूपःसविहस्यनृपसत्तम-
म् ॥ ९ ॥ बभाषेनृपतिश्रेष्ठत्वद्भाग्यन्दृश्यतेऽधुना । श्वेतद्वीपेमहाविष्णुर्यत्वयादृष्टएवहि ॥ १० ॥
सोऽयंतरुस्वरूपेणत्वद्भक्तिवशगोविभुः । उपस्थितोभवत्येवचर्मनेत्रद्वयेनतम् ॥ ११ ॥ साक्षात्प-
श्यसिभूपालत्वद्भाग्यमिदमद्भुतम् । ततोऽध्वरावशिष्टंचतत्कर्मकृतवान्नृपः ॥ १२ ॥ सहसातंसम
भ्यर्च्यमुनिनासहिताद्विजाः । तद्दारुतरुमानीयमहोत्सवतयाद्विजैः ॥ १३ ॥ यज्ञानांसुमहावेद्यां

सोई वृक्षरूप होकर तुमारी भक्ति से चर्मनेत्रों के सामने स्थित हैं ॥ १११ ॥ हे भूपाल ? साक्षात् तुम देखो यह तुह्मारे भाग्य के
फल है अब तुम यज्ञ का बाकी करो ॥ ११२ ॥ राजा ने पूजन करके नारद कल्पवृक्ष को अति उत्सव से लाकर यज्ञ बेदीमें

स्थापन कर दिया ॥ ११३ ॥ ११४ ॥ और नारद के बाणी के अनुसार पूजन किया पूजा के अन्तमें नारदप्रति राजाबोले ११५ हे नारद ! पृथ्वी में किस प्रकार नारायण की मूर्ति होगी किस करके यह की जायगी यह मुझसे कहो ॥ ११६ ॥ नारदजी राजा से यह वचन सुनकर हृदय में भगवान् का स्मरण करते हुये बोले ॥ ११७ ॥ भगवान् की मूर्ति किस प्रकार होगी किस

यज्ञेशंस्थापयेद्विभुम् । स्थापयित्वापुनःशीघ्रं सहस्रैरुपचारकैः ॥ १४ ॥ वचसानारदस्यापिपूजयामासर्सद्विजः ॥ ततःपूजावसानेऽसौनारदंनृपसत्तमः ॥१५॥ मुनेस्यप्रतिमाविष्णोःकीदृशीभवताभुवि । केनवासाविधेयात्वंतन्मांकथयनारद ॥ १६ ॥ इत्येवङ्गदताविप्रानृपस्यवचनम्मुनिः । श्रुत्वाबभाषेहृदयेस्मृत्वाविष्णुंपुनःपुनः ॥ १७ ॥ अनन्तमूर्तिभगवानूचेष्यास्यैवप्यगोचरा ।कस्या सुतेमतेवास्यात्तन्मेवक्तुंनशक्यते ॥ १८ ॥ एतत्समयमालम्ब्यदिव्यवाणीतदाजनि । अशरीरीद्विजवराशृण्वतांविस्मयप्रदा ॥ १९ ॥ शृणुराजन्महाप्राज्ञनारदेनसमंव्रतम् । इदंसुगुप्तंकर्तव्यंमहावेद्यांस-

करके होगी उसके कहने की मेरी सामर्थ्य नहीं है ॥ ११८ ॥ यह कहतेही सन सबके सुनते हुये आकाशवाणी हुई ॥ ११९ ॥ हे राजन् ! सुनो नारद करके सुन्दरी वेदी बनाई जाय ॥ १२० ॥ उसी में भगवान् अपनी इच्छा से उसी शून्य वेदी में अव-

तार लेंगे ॥ १२१ ॥ वेदी बनाकर पन्द्रह रोज तक तुम सब लोग बाहर नारायण का ध्यान करके उत्सव करो ॥ १२२ ॥ वेदीके बन जाने पर वृद्ध मनुष्य हे राजन्! हथियारों को लिये आवेगा उसको शिल्पकार्यमें लगादेना ॥ १२३ ॥ बाहर से

मन्ततः ॥ २० ॥ शून्यायाञ्जायमानायांवेद्यामस्यान्नृपोत्तम । सर्वेषांजगतामीशःस्वेच्छया-
॥२७॥ वतारिष्यति ॥ २१ ॥ यावत्पचदशानिस्युर्दिनानिचजनाधिप । तावत्कालंसमाच्छाद्यबहि
रुत्सवमाचर ॥ २२ ॥ उपस्थितोवृद्धतमावधिकोयोनराधिप । शस्त्रपाणिस्समंत्राशुशिल्पि
कर्माणियोजय ॥ २३ ॥ बध्वादृढतमन्द्वारन्तावत्कालन्नृपोत्तम । यावत्पञ्चदशान्येवदिनानि
स्युर्गुणाकरः ॥ २४ ॥ नानावाद्यरवःकार्यस्तावत्तुघटनावधि । श्रुतेचघटनाशब्देऽयाधिश्चविपदा
ञ्चयः ॥ २५ ॥ निरयेपतनन्तावत्तथासन्तानानाशनम् । पश्यतांशृण्वतांवापिभविष्यतिनसंश· ॥२७॥

द्वारों को खूब मजबूत बन्द कर देना जब तक पन्द्रह रोज नहीं जाय तबतक ॥ १२४ ॥ बाहर बाजा आदिक खूब बजाना जिसमें गढने का शब्द सुनाई न देवें जो कोई सुनेगा तो वह विपत्ति से ग्रसित होगा ॥ १२५ ॥ सुननेवाला नरकमें जाता है वहां

पर उसका कुल क्षय हो जायगा ॥ १२६ ॥ यदि राजा सुनै तो नाश होकर राज्य भ्रष्ट होजाय ॥ १२७ ॥ यह कहकर झट आकाशवाणी बन्द होगई उसी समय एक वृद्ध बढई हथियार लिये आया ॥ १२८ ॥ संसार के वञ्चन के निमित्त नररूप धरकर बढई भेषमें नारायण आये ॥ १२९ ॥ राजा इन्द्रद्युम्न ने जिस प्रकार आकाशवाणी सुनी थी उसी प्रकार सम्पूर्ण कार्य

यः ॥ २६ ॥ तथाराजाप्रमन्नस्यराज्यंचनृपसत्तम । अतःप्रयत्नतःकुर्यात्तन्निर्माणेमहाध्वनिं ॥२७
इत्युक्त्वाविरतोराजादिव्यवाणिद्विजोत्तमाः । आयातोवर्द्धकीः कश्चिद्वृद्धःशस्त्रधरस्तदा ॥२८॥
लोकानांवञ्चनार्थायनररूपधरोहरिः । ततस्तंवर्द्धकीराजानियोज्यतसकर्माणि ॥ २९ ॥ तथैवाचर
देवाऽसौयथादिव्यवचःश्रुतम् ॥ ३० ॥ इतिश्रीसूतसंहितायांनीलाद्रिमहोदयेपुरुषोत्तममाहात्म्ये
तृतीयोऽध्यायः ॥३॥ सूतउवाच । यदाहदिव्यावाणीसाद्विजास्तत्कृतवान्नृप । दिनेदिनेतदातत्र
दिव्यगन्धोव्यजायत ॥१॥ पारिजातादिवृक्षाणांदृष्टिश्चैवमुहुर्मुहुः । स्वगङ्गाम्बुजवास्तत्रपनितासू

किये ॥ १३० ॥ इति श्री उन्नावप्रदेशान्तर्गवतरौडाग्रामनिवासी पं० आनन्दमाधवदीक्षितात्मज पं० महाराजदीनदीक्षितकृत भाषा टीकायां तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

सूतजी बोले कि हे शौनक ! जिस दिन से आकाशवाणी हुई तभी से दिन दिन उन्नति उत्पन्न हुई ॥ १ ॥ पारिजात आदि देववृक्षों के पुष्प स्वर्गङ्गा का जल धीरे बर्षने लगा ॥ २ ॥ गाना बजाना नाचना आदिक होने लगे यज्ञ के लिये देवता लोग आ गये ॥ ३ ॥ दारूरूपधारी भगवान् के प्रगट होने से सब राजा लोग पृथ्वी में अति प्रसन्न हुये ॥ ४ ॥ और पन्द्रह

क्षमरूपिणः ॥ २ ॥ गीतनृत्यादिसंशब्दोदिव्योजनितदानृप । मखार्थमागतोदेवाः सर्वलोकनिवासिनः ॥३॥ आविर्भावेहरेस्तस्यदारुरूपधरस्यते । दृष्ट्वाहृष्टतराराजाभूतलेभूसुरोत्तमाः ॥ ४ ॥ उपासनान्तथैवात्रेतसर्वेचक्रुरुत्तमाम् । दिनेपञ्चदशेजातेतदाविप्राः स्वयंविभु ॥ ५ ॥ रत्नसिंहासनेदिव्येतदाचाविर्बभूवह । बलेनभद्रयायुक्तः सोयंसहसुदर्शनः ॥ ६ ॥ चतुर्द्धाविर्भवोदेवाः स्वयन्तत्रजनार्दन । नीलजीमूतसङ्काशःपद्मपत्रायतेक्षणः ॥ ७ ॥ शोणाधरधरः श्रीमान्भक्तानामभयङ्करः । बलदेवस्तथासप्तफणाविकटमस्तकः ॥ ८ ॥ भक्तानामवनायैवतथाभद्रादिजात्र-

रोज तक आति आनन्द से उपासना करते भये पन्द्रहवें रोज ॥ ५ ॥ श्री नारायण बलभद्र सुभद्रा सुदर्शन सहित रत्नसिंहासन पर स्थित प्रगट हुये ॥ ६ ॥ चार प्रकार से रूपों को विभजित करके नारायण आपही प्रगट हुये श्यामवर्ण कमल के फूल की

पखुरीसदृश नेत्र कुंदरूके सदृशओठ श्रीमान् भक्तोंको अभयप्रद नारायण और सातफणायुक्त मस्तक है जिनकी ८ भक्तोंको पालन करनेवाले सुभद्राबाहिनयुक्त नीचेको हाथकिये सुन्दरमुख जिनका ॥ ९ ॥ जितेन्द्रिय सुदर्शन सहित दारुरूपधारी जगन्नाथजी बेदीमें प्रगटहुये राजाइन्द्रद्युम्न प्रकाशित जगन्नाथजीको देखकर ॥१०॥ प्रणाम करतेभये नारदभी नमस्कारकिया और दोनोही स्तुति क

भाः । अधोवलम्बिहस्ताब्जकुङ्कुमाभाशुभानन ॥ ९ ॥ सुदर्शनस्तमोरूपीबभूवविजितेंद्रियः । एवञ्चतुर्विधाविष्णोर्दारुरूपधरस्यवै ॥ १० ॥ मूर्तिम्प्रकाशतेवद्यांवर्द्धकीचनविद्यते । स्वयम्प्रकाशमानन्तं जगन्नाथंजनाधिपः ॥ ११ ॥ प्रणम्यनारदस्यापितुष्टावपरयामुदा । त्रैलोक्यादागतादेवावासवप्रमुखाःसुराः ॥ १२ ॥ यक्षगन्धर्वऋषयोप्यन्येयेदेवयोनयः । तेसर्वेदंडवद्भूयः प्रणिपत्यचतुष्टवुः ॥ १३ ॥ सूतउवाच ॥ ततोविप्रानारदोक्त्याभक्त्यापरमयानृपः । पूजयामास विधिनातदाहम्परमेश्वरम् ॥१४॥ गीतैस्तोत्रैःकवित्वैश्चपुराणैःपरमेश्वरम् । नारदेनसमन्तावदन्यै

रने लगे ॥ ११ ॥ देवयोनि यक्षगन्धर्व ऋषि आदिक नारायण को साष्टाङ्ग नमस्कार करके स्तुति करने लगे ॥ १३ ॥ सूतजी बोले कि हे शौनक ! नारद के कहने से भक्तियुक्त होकर विधिपूर्वक पूजन किया ॥ १४ ॥ नारदजी मणिक के साथ अनेक प्र-

कार से भगवान की स्तुति किई ॥ १५ ॥ और इन्द्रद्युम्न राजा से बोले हे राजन् ! तुमारेही हित पृथ्वी में नारायण प्रगट हुये ॥ १६ ॥ पृथ्वी में तुमारेही कारण से सद्गति है हे महीनाथ ! हम सब लोग आज कृतार्थ हुये ॥ १७ ॥ हे राजन् ! नीलाचल पर्वत में बरगद के निकट वायुकोण में दिव्य मन्दिर ॥ १८ ॥ अति ऊंचा हरि के वास करने के लिये बनवावो यह नारद के व

मणिवरैस्सह ॥ १५ ॥ ततोदेवऋषिर्विप्राक्षितीशन्तमुवाचसः । एषविष्णुस्त्वदर्थञ्चप्रकाशोज-

निभूतले ॥ १६ ॥ तवप्रकाशाल्लोकानांसङ्गतिःस्यान्महीतले । अभवाममहीनाथकृतार्थाश्चव-
यंपरम् ॥ १७ ॥ अथनीलाचलेरम्येन्यग्रोधान्समहत्ततः । मरुत्कोणस्थलेदिव्यंप्रासादंसुदृढं
शुभम् ॥ १८ ॥ महोन्नतंकुरुशीघ्रंनिवासायहरेर्नृप । ततोनारदवाचासौधर्मात्माधरणीपतिः
॥ १९ ॥ तत्तथैवाचरेत्क्षिप्रंभूदेवाहृष्टमानसः । मनोहरतरन्तावत्प्राकारद्वयवेष्टितम् ॥२०॥ तो-
रणालंकृतन्दिव्यंप्रासादंशुभतेक्षणम् । रचयित्वतद्यदमपिनीरोधनगृहंपुनः ॥ २१ ॥ तदग्रेविस्तृतं-

चन सुनकर ॥ १९ ॥ राजा प्रसन्न मन दो छाल दिवार से घिरा हुआ ॥ २० ॥ बन्दनवारों से सुशोभित मन्दिर बनवाकरतै-
यार कराया ॥ २१ ॥ उसके आगे गरुड जी के स्थित होने के लिये स्थान बनवाया उसके आगे भोग स्थान स्नानस्थान शयन

स्थान आदि बनवाये ॥ २२ ॥ मन्दिर के चारों तरफ चार द्वार लगवाकर अति ऊंचा सबसे प्रशंसनीय मन्दिर बनवाया॥२३॥ फिर मंत्री के लिये और अपने लिये शिल्पिकर्म करने वालों से बनवाया ॥ २४ ॥ तब नारदजी बोले कि हे राजन् ! अब ना·

वेश्मसुपर्णस्थितिहेतवे । तस्याग्रेमण्डपःकार्योभोगस्नापनहेतवे ॥ २२ ॥ प्राकारस्यचतुर्दिक्षुच-
तुर्द्वारविभूषितम् । पीनंमहोन्नतन्दिव्यंलोकोत्तरमनिन्दितम् ॥ २३ ॥ शिल्पिकाःकर्मकुश-
लाश्चक्रुस्त्रैलोक्यपावनम् । प्रासादंनिर्मितंतत्रमंत्रिणंचनिजात्मजम् ॥ २४ ॥ नियोज्याऽथब्र-
ह्मपदङ्गन्तुमिच्छुःसनारदः । तत्प्रतिष्ठापनङ्कर्तुन्त्वरयासमहीपतिः ॥ २५ ॥ ब्रह्माणञ्चसमानेतुं-
भूतलम्प्रतिभूसुराः । आनयित्वाथतंशीघ्रंविश्वावसुमकल्मषम् ॥ २६ ॥ पुरामाधवसेवाकन्तञ्च-
विद्यापतिंद्विजम् । दारुब्रह्मार्चनेतत्रतौनियोज्यद्विजोत्तमाः ॥ २७ ॥ वचसानारदस्यास्यततः

रायण की प्रतिष्ठा करने के लिये ब्रह्माजी को बुला लाना चाहिये ॥ २५ ॥ यहां पर विश्वा वसुको बुलाकर और विद्या पतिको दारुभगवान् के पूजन में लगाकर ॥ २६ ॥ २७ ॥ नारद के कथनानुसार उसी क्षण स्मरण करते ही हुये पुष्प मय रथ

ब्रह्मलोक से आगया ॥ २८ ॥ रामकृष्ण सुभद्रा को नारद और राजा पूजन करके प्रातःकाल ब्रह्मलोक को चल दिये ॥२९॥
अनेकन लोगों को देखते हुये नारद और राजा मनुष्य देह धारण किये ॥ ३० ॥ क्षुधा पिपासा मरना आदिव्याधियों से रहित
देव सेव्य ब्रह्मलोक में प्राप्तहुये ॥ ३१ ॥ जहांपर झूठे का नाम नहीं है सत्यही सदैव वर्त्तमान रहता है इसी से सत्य यह नाम

पुष्पमयेरथम् । नारदस्मरणाप्राप्तेब्रह्मलोकादनुत्तमे ॥२८॥ रामंकृष्णंसुभद्राञ्चसम्पूज्यनृपसत्तमः।
नारदेनसमंविप्रास्तैत्राषत्वेयियोपुनः ॥ २९ ॥ लोकलोकसमस्तैस्तैःसंस्तुतः सहनारदः ।
मानुष्यदेहमाश्रित्यब्रह्मलोकम्प्रातिव्रजम् ॥३०॥ प्रतिलोकस्तुतैःसर्वैःप्राप्तवान्ब्रह्मणःपदम । क्षुत्तृषा-
मरणव्याधिरहितंसुरसेवितम् ॥ ३१ ॥ यत्रनासत्यलेशोऽपिसत्यमत्यन्तमास्तिच । तस्मात्सत्यमि-
तिप्राहुरव्ययम्ब्रह्मणःपदम् ॥ ३२ ॥ एतादृशं त्यलोकम्प्राप्तवान्म द्विजोत्तमः । ब्रह्मद्वारेतयोर्ग-
म्येसान्तियत्रमहत्ययः ॥ ३३ ॥ इन्द्रादयस्सुरास्सर्वेनानाभूषणभूषिताः । मणिकोदरनाम्नातेद्वार-

ब्रह्मलोक का है ॥ ३२ ॥ इस प्रकार सत्यलोक में सहित नारद के राजा ब्रह्मा के द्वार पर गये ॥ ३३ ॥ जहां परइन्द्रादिदेवता
अनेक भूषणों से सुशोभित हैं मणिकोदर दो द्वार पर स्थित है ॥ ३४ ॥ राजा के साथ मंद मुसकान से युक्त नारद को देखकर

दूरही से द्वारपाल ने नारद को प्रणाम किया ॥ ३५ ॥ हे शौनक नारदजी राजाको संग लेकर अन्तःपुर को जाना चाहे कि द्वारपाल ने रोका ॥ ३६ ॥ उसी समय नारदजी बोले कि हे द्वारपाल ! ब्रह्माजी के पास शीघ्र जाकर कहो कि इन्द्रद्युम्न रा

पालेनवारिताः ॥ ३४ ॥ संस्थिताःसहसाविप्रानारदम्मुनिपुंगवम् । दृष्ट्वाप्रणेमुस्तेदूरान्मन्दहासाञ्चिदाननां ॥ ३५ ॥ इंद्रद्युम्नंगृहीत्वासौसङ्गन्तःपुरमासरत् । अथतम्भूपतिंविप्राःद्वारपालोन्यवारयेत् ॥ ३६ ॥ नारदउवाच ॥ द्वारपालव्रजेत्क्षिप्रमिन्द्रद्युम्नमहीपतिम् । गृहीत्वानारदःप्राप्तोब्राह्मणमितिप्रोवद ॥ ३७ ॥ इत्युक्तोनारदेनासौमणिकोदरएवसः । पुनर्बभाषेतंविप्राद्वारपालकसत्तमः ॥ ३८ ॥ मणिकोदरउवाच । समयोनभवत्येवब्रह्मन्नास्तेप्रजापतिः । सामवेदेमहाविष्णुस्तुवत्तद्गतमानसः ॥ ३९ ॥ त्वमेवगच्छभोब्रह्मन्यतःपुत्रोभवान्प्रभोः । विज्ञाप्यसमयंज्ञात्वा

जा को साथ लिये नारद आये हैं यह कहो ॥ ३७ ॥ नारद बचन सुनकर मणिकोदर बोले कि ॥ ३८ ॥ हे नारद ! समय ठीक नहीं है ब्रह्मा सामवेद करके महाविष्णु की स्तुति कर रहे हैं ॥ ३९ ॥ हे ब्रह्मन् ! आप अन्तःपुर में चले जावैं और ब्र-

ह्मा की आज्ञा लेकर राजा को ले जावें ॥ ४० ॥ मनुष्य लोक से आये राजा को यही पर स्थित करदीजिये आप जाइये ४१
बिना ब्रह्मा की आज्ञा के यह कैसे भीतर जा सक्ते हैं सूतजी शौनक से कहते हैं कि द्वारापाल के वचन सुनकर ॥ ४२ ॥ ना

नेयोऽयन्धरणीश्वरः ॥ ४० ॥ प्रत्याख्यातमशक्यम्भोमुनेत्वंयाहिसत्वरम् । अयन्तिष्ठतुभूपालोम
र्त्यलोकात्समागतः ॥ ४१ ॥ कथंयास्यत्ययंशीघ्रंविनाज्ञाम्ब्रह्मणः पराम् ॥ सूतउवाच । द्वारपा
लवचः श्रुत्वानारदोभूपतिन्ततः ॥ ४२ ॥ तत्रसंरक्ष्यवेगेनगतवान्ब्रह्मसन्निधिम् । दृष्ट्वातम्प्रणि-
पत्याहब्रह्मयोनिङ्कृतांजलिम् ॥ ४३ ॥ निवेदयामासतदाभूपस्यागमनन्द्विजाः । भवदाज्ञा
यथाजातातथैवकृतवानहम् ॥ ४४ ॥ इन्द्रद्युम्नंचराजानमानीतन्तवसन्निधिम् । नारदस्यवचः
श्रुत्वास्मिताञ्चितमुखःप्रभुः ॥ ४५ ॥ भ्रूक्षेपङ्कृतवान्क्षिप्रम्भूपागमनसूचकम् । इङ्गितज्ञातिविज्ञे-

रदजी शीघ्रता से ब्रह्माके पास गये और हाथ जोरकर ब्रह्माजी से बोले ॥४३॥ द्वारपर स्थित इन्द्रद्युम्न राजा है आपकी आज्ञा
होवै वैसा करैं ॥ ४४ ॥ आपके निकट इन्द्रद्युम्न राजाको ले आये हैं नारद के वचन सुनकर मुसकी से युक्त मुखारविन्द सेयुक्त

भौंहों के संकेत से राजा के लाने के लिये ब्रह्माने सूचित किया नारद जी संकेत जानकर ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ सुर दुर्लभ स्थान ब्रह्मा के निकट राजा इन्द्रद्युम्न को लेगये राजा ब्रह्माजी को देखकर ॥ ४७ ॥ जिनकी सेवा सावित्री और शारदा कर रही है जहां पर ब्रह्म तेज से सामवेदादिक वेद प्रकाशित हो रहे हैं ॥ ४८ ॥ एतादृश ब्रह्माजी को दूरही से दंडाकार नम-

यम्मुनिस्तन्नृपसत्तमम् ॥ ४६ ॥ निनायाम्बुजयोनेस्तत्समीपंसुरदुर्लभम् । इन्द्रद्युम्नोनृपश्रेष्ठोदृ-ष्ट्वाब्राह्मणमादरात् ॥ ४७ ॥ सावत्रीशारदाभ्याञ्चसेव्यमानंमुहुर्मुहुः । सामगानम्प्रकुर्वन्तं-स्फुरन्तम्ब्रह्मतेजसा ॥४८॥ सर्वलोकेश्वरंदृष्ट्वादंडवत्प्रणिपत्यच । तुष्टावहृष्टमनसाकृतकृत्योबभू वसा ॥ ४९ ॥ अथगानावसानेसौतम्ब्रह्मनृपसत्तमम् । उक्तवान्परमप्रीत्यापरमेशपरायणम् ॥ ५० ॥ ब्रह्मोवाच । कथमागच्छसिब्रूहिकिन्तोभिलषितन्नृप । मद्दर्शनंयतोनूनंसर्वकामफलप्रदम्

स्कार किया और प्रसन्न मन होकर स्तुति किया अपने को अति कृत कृत्यनाना ॥ ४९ ॥ स्तुति के अन्तमें प्रसन्न मन होकर ब्र-ह्माजी बोले ॥ ५० ॥ हे नृप ? क्यों आये क्या तुमारा मनोरथ है कहो ? मेरा दर्शन सम्पूर्ण कामना को देने वाला है ॥ ५१ ॥

जग. राजा बोला हे भगवान् ! हे देवपितामह : तुमको नमस्कार है आप अन्तर्यामी हैं औरं आप सब जानते हैं ॥ ९२ ॥ आपकी
आज्ञा से नारदजी के कहने पर आपकी कृपा से दासस्वरूप विष्णु ने निज इच्छा से दर्शन दिया और पृथ्वी में आपकी कृपासे माहा.

॥३२॥ ॥ ५१ ॥ इन्द्रद्युम्नउवाच । नमस्तेभगवन्देवपितामहनमोऽस्तुते । अन्तर्यामीत्वमेवासिज्ञातंसर्व
न्त्वयाप्रभो ॥ ५२ ॥ तवाज्ञयानारदोक्त्यासर्वांस्तान्यज्ञसत्तमान् । तवानुग्रहतःकृत्वाततोदारुस्व
रूपिणः॥ ५३ ॥ विष्णोश्चनिर्मितामूर्तिःस्वच्छयाचारुदर्शना । प्रासादःशोभनोभूमौतवानुग्रहतो
ऽप्यभूत् ॥ ५४ ॥ प्रतिष्ठार्थञ्चयद्द्रव्यंशालाचयादृशीभवेत् । तत्सर्वंसर्वदेवेशनिष्पन्नंभवदाज्ञ
या ॥ ५५ ॥ इदानीम्भूतलम्ब्रह्मञ्ज्ञात्वासुराशिरोमणे । प्रतिष्ठायत्नमाचेष्ठ्यतद्दारुस्थापनङ्कुरु
॥ ५६ ॥ सूतउवाच । इतिविज्ञापनेजातब्रह्मणःपुरतोद्विजोः । दुर्वासासहसागत्यप्रणिपत्यमुहुर्मु.

सुन्दर मन्दिर स्थान भी बन गया ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ प्रतिष्ठा की सामग्री और यज्ञ शाला भी आप की आज्ञा से तैयार है ९९ ॥३२॥
अब आप कृपा करके प्रतिष्ठा करने के निमित्त आप चलें और दासत्वरूप भगवान् को स्थापित करिये ॥ ९६ ॥ सूतजी बोले

उसी समय महाराज दुर्वासाजी वहां पर ब्रह्मा के रूप को नमस्कार करते हुये आये जहां पर देवता पितर गन्धर्व किन्नर यक्ष राक्षस चारण ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ और देवता लोग स्थित थे वहां पर दुर्वासा को आते ही द्वारपाल ने रोका और झट जाकर

हुः ॥ ५७ ॥ प्रजापतेतेरूपंवांदेवाश्चापितरस्तथा । गन्धर्वाकिन्नरायक्षाराक्षसाचारणाश्चये ॥ ५८ ॥ तथान्येखेचराःसर्वेवर्त्ततेकमलासन । द्वारपालेनमहतानिवारिततराप्रभो ॥ ५९ ॥ आज्ञाङ्कुरुमहाप्राज्ञत्वत्पादयुगम्पुनः । पश्यन्तुस्फुटपद्माक्षदीनवत्सन्तितेविभो ॥ ६० ॥ ततो विहस्यभगवान्ब्रह्मोदुर्वासस्रेरितम् ॥ श्रुत्वातदाहसहसातञ्चगम्भीरयाधुना ॥ ६१ ॥ ब्रह्मोवाच। अयंहितपसासिद्धः पञ्चमःपुरुषः परः । वैष्णवोविष्णुभक्तिज्ञोधर्मात्त्कस्तननोनृप ॥ ६२ ॥जीव- न्मुक्तोमहाविष्णोस्तथाप्रियतरोमहान् । तामानयपुनः शीघ्रङ्कुर्वन्तुममदर्शनम् ॥ ६३ ॥ सूत-

ब्रह्मा से दुर्वासा का आगमन कहा ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ब्रह्माजी मुसकराकर गंभीर वाणी से बोले ॥ ६१ ॥ यह तपस्या से सिद्ध पंचम पुरुष है वैष्णव विष्णु भक्त को जानने वाले हैं ॥ ६२ ॥ जीवन मुक्त मेरे अति प्यारे दुर्वासाजी को झट ले आवो ॥ ६३ ॥

सूतजी बोले कि हे शौनक ? यह आज्ञा पाकर दुर्वासा ज्योंहीं ब्रह्माके पास को चले कि इन्द्रादिक देवता और जो कोई वहां था
जग. सबों ने दूरही से नमस्कार किया राजा इन्द्रद्युम्न भी दंडाकार गिरकर नमस्कार करते भये उसी समय ब्रह्माजी बोले कि माहा.
हे भूप ! अब तुम यहां से जावो और प्रतिष्ठा की सामग्री जाकर करो ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ हम मनुष्य लोक के कार्य के लिये

॥३३॥ उवाच । भवाज्ञया ततोदेवावासवाज्ञाद्धिजोत्तमः । दुर्वाससासुमतिन दृष्ट्वादूरान्नमस्कृतिम्
॥ ६४ ॥ कृत्वाथदण्डवद्भूपःप्राणिपत्यमुहुर्मुहुः । ब्रह्मोवाच । गच्छभूपत्वमधुनासम्भारान्कुरु
सांप्रतम् ॥ ६५ ॥ गच्छामिचततोमर्त्यलोकञ्चकार्यहतवे । इत्थंब्रह्मोक्तिमाकर्ण्यसहसासनृपोत्तमः
॥ ६६ ॥ पुनर्बभाषेऋषयोब्रह्माणंब्रह्मवादिनम् । इन्द्रद्युम्न उवाच ॥ प्रजापतेमहाबाहोसर्वसम्भा
रसंयुतम् ॥६७॥ शालांप्रासादमत्युग्रंप्रासादश्चहरेस्तथा । संप्राप्तन्तरसाप्राप्तस्त्वत्समीपम्महोन्नत ॥३३॥

आवैंगे यह ब्रह्माजी के वचन सुनकर ॥ ६६ ॥ ब्रह्माजी से राजा इन्द्रद्युम्न बोला कि हे महाबाहु ? सम्पूर्ण सामग्री यज्ञशाला
और हरिका अति ऊंचा मन्दिर यह सब वहां पर तैयार है ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ सूतजी बोले कि हे शौनक ? राजाके यह वचन

सुनकर ब्रह्माजी फिर बोले कि राजा तुमारे बंस वाले ॥ ६९ ॥ यह सामग्री तुमारी सेना सब नष्ट होगये तुमारे आने के बाद से सत्रह युग बीत गये ॥ ७० ॥ तबसे आज तक पृथ्वी में कोटिन राजा होगये अब केवल विष्णुकी प्रतिमा और मन्दिर र-

म् ॥ ६८ ॥ सूतउवाच । तच्छ्रुत्वापद्मयोनिंतंपुनरूचेद्विजोत्तमाः । सर्वन्नष्टंनृपश्रेष्ठत्वद्वंशप्रभवा-
जनाः ॥ ६९ ॥ सम्भाराश्चतथासैन्यंमन्वन्तरमजायत। एकसप्ततिसंख्यानियुगानिचगतानिभो
॥ ७० ॥ कोटिशोत्रनृपाजातातत्रभूमितलेनृप । केवलम्प्रातिमाविष्णोःप्रासादश्चमहोदयः ॥
७१ ॥ शङ्खंनिधिस्तथापद्मनारदंचमुनीश्वरम्। सङ्गदत्वानारेदाक्त्यासंभारान्कुरुभोनृप॥ ७२॥
आदौगच्छप्रजास्वमिन्तातवानुपदंततः । इत्युक्त्वाविरतेदेवेपद्मयोनौद्विजोत्तमाः ॥ ७३ ॥
देवान्सर्वान्समाकर्ण्यजगुश्चनीलपर्वतम् । इन्द्रद्युम्नोऽपिसंहृष्टोजातःसज्जनपालकः ॥ ७४ ॥

चा है । ७१ ॥ अब तुम जावो शंखनिधि पद्मनिधि नारद को तुमारे संग में भेजता हूं नारद के आज्ञानुसार सम्पूर्ण सामग्री करना ॥ ७२ ॥ हम तुमारेही पीछे शीघ्र आवैंगे यह कहकर ब्रह्माजी चुप होगये ॥७३ ॥ देवता लोग यह हाल सुनकर प्रसन्न

मन नील पर्वत को चल दिये इन्द्रद्युम्न राजा भी नारद के साथ ब्रह्माको प्रणाम करके चल देते भये ॥ ७४ ॥ इति श्रीउन्नाव प्रदेशान्तर्गत बरौंडा ग्राम निवासी पं० आनन्दमाधव दीक्षितात्मज पं० महाराजदीन दीक्षित कृत भाषाटीकायां चतुर्थोऽध्यायः॥४॥

शौनकादिक ऋषि बोले कि हे सूतजी नारदादिक मुनि श्रेष्ठ और इन्द्रादिक देवता ब्रह्माको आज्ञा पाकर दासस्वरूप भगवान्

इतिश्रीसूतसंहितायांनीलाद्रिमहोदयेपुरुषोत्तममाहात्म्येचतुर्थोऽध्यायः ४ऋषयऊचुः । नारदाद्या मुनिवराः इन्द्राद्याश्चसुरास्तथा । ब्रह्माज्ञयासमायातादारुब्रह्मस्वरूपिणम् ॥ १ ॥ विष्णुंविलोक्यकिञ्चक्रुरिन्द्रद्युम्नोनृपस्तथा । सूतउवाच । ब्रह्मलोकात्समागत्यतेसर्वेवासवादयः ॥ २ ॥ गुप्तंदारुस्वरूपन्तदृष्ट्वासंपूज्यसत्तमाः । तत्रगत्वामहाविष्णुंस्तुत्वाचैवपुनःपुनः ॥ ३ ॥ ततः प्रसादनिकटन्तेजग्मुःसर्वउत्तमाः । अत्युच्चपृथुलंदिव्यंप्राकारद्धयवेष्टितम् ॥ ४ ॥ मनोहरंसुधा

के पास गये ॥ १ ॥ विष्णुजी को देखकर इन्द्रद्युम्न राजा क्या करते भया ? यह हमसे कहिये सूतजी कहने लगे कि सम्पूर्ण इन्द्रादिक देवता ब्रह्मलोक से आकर ॥ २ ॥ गुप्त दासस्वरूप भगवान् को देखकर पूजन किया फिर महाविष्णु की स्तुति करके मन्दिर के पास गये जो अति ऊंचा दो छाल दिवारियों से युक्त है ॥ ३ ॥ ४ ॥ जिसका उपमा मैं वर्णन क्या करूं अनुपम संसार

के भय को नाश करने वाला मन्दिर देखा ॥ ५ ॥ जहां पर हे शौनक ? गालव राजा करके स्थित थे देखकर झट मूर्ति को राजा ने मन्दिर के पश्चिम दिशा में स्थित कर दिया ॥ ६ ॥ और मन्दिर के स्थापन कि क्रिया करने लगा गालव के भी सेवक वहां पर थे वह शीघ्र जाकर ॥ ७ ॥ विरजा मंडल जो वैतरणी नदी के किनारे है वहां पर स्थित था जाकर सम्पूर्ण वृत्तान्त कहा॥८॥

लिप्तंप्रासादविगतोपमम् । तादृशंददृशुः सर्वेवर्सलोकभयापहम् ॥ ५ ॥ तत्रास्तेमाधवोविप्रः गालवेनप्रतिष्ठितः । तन्दृष्ट्वाथबहिष्कृत्यपश्चिमस्यांदिशिद्विजाः ॥ ६ ॥ प्रासादस्यततः शीघ्रंस्थापयामासुरुत्तमाः । तत्सेवकजनास्तेचाक्षिप्रङ्गत्वाद्विजोत्तमाः ॥ ७ ॥ विरजामण्डलेक्षेत्रे तिष्ठन्तङ्गालवन्नृपम् । गत्वातत्कथयामासुस्तदावैतरणीतटे ॥ ८ ॥ श्रुत्वातद्गालवः सोयंचतुरङ्गबलान्वितः । क्रोधात्समागतः क्षिप्रंक्षेत्रंश्रीपुरुषोत्तमम् ॥ ९ ॥ दृष्ट्वातत्राद्विजश्रेष्ठानारदमृषि

गालव राजा सुनकर अति क्रोध में प्राप्त होकर चतुरंगिणी फौज हाथी घोडा रथ पैदल को साथ लेकर पुरुषोत्तम क्षेत्र को चल दिया ॥ ९ ॥ देवता ऋषि इन्द्र आप लोग यहां पर आकर हमारे मन्दिर से माधव भगवान को क्यों बाहर कर दिया यह व

चन सुनकर नारद बोले ॥ १० ॥ ११ ॥ हे भूप ! मैं तुमसे पूर्वही की कथा कहता हूं सुनो ॥ १२ ॥ उस इन्द्रद्युम्न राजा ने पहिले इस नीलाचल पर्वत में आकर महाघोर बनको कटाकर बस्ती कराई ॥ १३ ॥ हजार अश्वमेधयज्ञ करके ब्रह्मण्य नारायण

सत्तमम् । पप्रच्छविनयात्तत्रगालवोऋषिसत्तमः ॥ १० ॥ गालवउवाच ॥ भोभोदेवऋषेसर्वेवा
सवाद्याःसुरोत्तमाः । आगत्यतैःकथंसर्वेप्रासादान्मेमुनेऽधुना ॥ ११ ॥ बहिष्कृतोमाधवोऽ
सौब्रूहिकिंदतुरत्रकिम् । गालवस्यवचः श्रुत्वानारदोमुनिसत्तमाः ॥ १२ ॥ कथंयामासतम्भूपं
कथान्तत्रपुरातनीम् । नारदउवाच ॥ शृणुगालवमद्वाक्यम्पूर्ववृतान्तसंयुतम् ॥ १३ ॥
इन्द्रद्युम्नोयमागत्यनीलाचलनलम्पुरा । छेदयित्वामहोरण्यङ्कृत्वाचवसतिंपराम् ॥ १४ ॥
वाजिमेधसहस्रञ्चकृतवा नृपसत्तम । दारुब्रह्मस्वरूपस्यपरंब्रह्मण्यदर्शनम् ॥ १५ ॥

के दर्शन किये ॥ १४ ॥ भगवान् अपनी इच्छा से वेदी में चार रूप होकर अवतार लेते भये तिनका देखकर बास करने के लिये यह इन्द्रद्युम्नही ने मन्दिर बनवाया था ॥ १५ ॥ प्रतिष्ठा की सामग्री इकट्ठी करके ब्रह्माको बुलाने के लिये ब्रह्मलोक

गया था ॥ १६ ॥ इतनेही देर में मन्वन्तर व्यतीत हो गया नारदजी यह कहकर चुप होगये ॥ १७ ॥ गालव राजा मन्त्रियों सलाह लेकर राजा इन्द्रद्युम्न के शरण में प्राप्त हो गया ॥ १८ ॥ हे शौनक ! राजा इन्द्रद्युम्न नारद से पूछकर प्रतिष्ठा के

संप्राप्तः स्वेच्छयावेद्यामवतीर्णश्चतुर्विधाः । तन्दृष्ट्वातन्निवासार्थम्प्रासादः कारितोमहान्
। १६ ॥ प्रतिष्ठार्थञ्चसम्भारान्संपाद्यचमहीपतिः । ब्रह्माणंचसमानेतुंब्रह्मलोकम्प्रतिययौ
॥ १७ ॥ तत्रस्थानेमहीपालेमन्वन्तरमजायत । सूतउवाच ॥ इत्युक्त्वानारदस्तूष्णीं
तस्थौविप्राःसगालवाः ॥ १८ ॥ मंत्रिभिस्सहसंञ्चित्यतम्भूपशरणंययौ । तत्पृष्ठस्थलमालम्ब्य-
तस्थौगालवभूपतिः ॥ १९ ॥ नारदंपरिपृष्ट्वाथद्विजःसनृपकुंजरः । प्रतिष्ठायोग्यसंभारपत्रंप्राप्य
ततोऋषेः ॥ २० ॥ संभारान्संचिरान्कृत्वारथत्रयमतःपरम् । नानालङ्कारसंयुक्तादिव्याम्बरसुम

योग्य सामग्री का पत्र लेकर ॥१९ ॥ सामान इकट्ठा किया और तीन रथ अनेक अलकारोंसे युक्त बनवाये ॥ २० ॥ अनेक रत्नों से युक्त किया अनेक अवतारों की तस्वीर जिसमें बनी है ॥ २१ ॥ सुन्दर घोडा और सारथी युक्त प्रकाशित देखने वा-

जग, लों को आनन्द को देने वाले ॥ २२ ॥ इस प्रकार के उत्तमोत्तम तीनों रथों को देखकर ॥ २३ ॥ कर्म के जाननेवाले मुनियों माहा.
करके युक्त नारदादिक ऋषि ॥ २४ ॥ दासभगवान के आने के लिये महोत्सव करने लगे सूतजी शौनक से बोले कि नार-

ण्डितम् ॥ २१ ॥ नानारत्नसमुल्लासंहैमञ्चारुतरंद्विजाः । नानावतारलीलानान्द्योतकम्प्रतिमावृ-
॥३६॥ तम् ॥ २२ ॥ ततःस्वर्णमयैरश्वैसूतेनचसमन्वितम् । देदीप्यमानंसहसापश्यतांहर्षवर्द्धनम् ॥२३॥
एवंविधम्महासज्जलोचनानन्दवर्द्धनम् । रथत्रयंनभोदृष्ट्वासेचनानन्दवर्द्धनम् ॥ २४ ॥ रथत्रयन्त
तोदृष्ट्वाप्रतिष्ठाकर्मतत्कृतम् । नारदेनसमेतैस्तैर्मुनिभिःकर्मकोविदैः ॥ २५ ॥ दारुब्रह्मागमार्थ-
ञ्चतदायातोमहोत्सवः । सूतउवाच ॥ ततस्सर्वैनारदाद्यामुनयोनिर्जरास्तथा ॥ २६ ॥ इन्द्रद्यु-
म्नश्चभूपश्चगालवश्चमहीपतिः । अन्येतेबहवोमर्त्यारथरज्जुकुलंभृशम् ॥ २७ ॥ समाकृष्यमहा ॥३६॥

दादिक मुनि और देवता इन्द्रद्युम्नादिक राजा और गालव आदिक मनुष्य सभी रथकी रस्सी को ॥ २५ ॥ २६ ॥ खींचन
के लिये महाभक्ति से युक्त हुये इसी समय में ब्रह्मलोक से युक्त ब्रह्मा ॥ २७ ॥ चर्तुमुख विमान में स्थित दोनों ओर सावित्री

सरस्वती ॥ २८ ॥ जिनकी स्तुति कर रही हैं सम्पूर्ण देवता से स्तुत्य सम्पूर्ण मुनि वर्यो करके स्तुयमान ॥ २९ ॥ सुन्दर वि
मान के प्रकाश से चारों तरफ प्रकाशित करते हुए ब्रह्माजी आये ॥ ३० ॥ ब्रह्मा को आते देखकर नारदादिक महाऋषि
और इन्द्रद्युम्न राजा पृथ्वी में दंडाकार गिरकर नमस्कार करने लगे ॥ ३१ ॥ यज्ञशाला यज्ञ सामग्री मन्दिर देखकर ब्रह्मा सा

भक्त्याबभूवुर्द्विजसत्तमाः । अत्रान्तरेब्रह्मलोकात्ततोहंससमन्वितम् ॥ २८ ॥ दिव्यंविमानंसौवर्ण
समारुह्यचतुर्मुखः । उभयोःपार्श्वयोर्विप्राःसावित्रीचसरस्वती ॥ २९ ॥ ताभ्याञ्चसहितोदेवःसर्व
देवनमस्कृतः । सर्वैश्चमुनिभिर्देवैस्तूयमानोनिरन्तरम् ॥ ३० ॥ विमानखचितोल्लासिरत्नवृन्दप्र
भाभरैः । समन्ताल्लक्षिततरःप्राप्तःश्रीनीलभूधरम् ॥ ३१ ॥ ततस्सर्वेचतेदेवाःनारदाद्यामहर्षयः ।
इन्द्रद्युम्नश्चसहसानेमुस्तंदंडवद्भुवि ॥ ३२ ॥ शालायामथसम्भारेप्रासादेचद्विजोत्तमाः । दत्वाव
धानत्ववदत्साधुसाधुतदेतिसः ॥ ३३ ॥ ततस्सार्द्धंसमस्तैस्तैर्नारदप्रमुखैर्विधिः । नारायणरथे-
दिव्येप्रविश्यदारुरूपिणम् ॥ ३४ ॥ आनन्दाश्रुलसद्गात्रः प्रणिपत्यमुहुर्मुहुः । सामवेदेनतुष्टाव

धु २ शब्द करने लगे ॥ ३२ ॥ फिर नारदादि ऋषि और इन्द्रद्युम्न राजा के साथ ब्रह्माजी रथके पासगये रथ को देखकर
भगवान् को देखा सामवेद के मंत्रो से प्रणाम कर के स्तुति किया ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ फिर बलदेवजी को नमस्कार और स्तुति

किया, ऋग्वेद के मंत्रों से समुद्र की स्तुति करके ॥ ३५ ॥ यर्जुवेद से चक्रकी और अथर्वण वेद से जगत्पति ब्रह्माजी की स्तुति करके ॥ ३६ ॥ विधिपूर्वक मन्दिर की प्रतिष्ठा किया प्रथम नित्य सिंहासन पर बलभद्रजी को स्थापन किया ॥ ३७ ॥ उनके उत्तर में सुदर्शन चक्र को यथा विधि से स्थापन करते भये ॥ ३८ ॥ स्थापन के वाद दर्पण मण्डल में महा अभिषेक

स्तोत्रैरन्यैरनेकशः ॥ ३५ ॥ तथैवबलदेवन्तन्नमस्कृत्यपितामहः । ततोऋग्वेदतस्तुत्वामहाभद्र-
प्रदांशिवाम् ॥ ३६ ॥ यजुर्वेदेनसन्तोष्यचक्रमाथर्वणोदितम् । इतिस्तुत्वादेवदेवन्ततोब्रह्माजग-
त्पतिम् ॥ ३७ ॥ प्रासादस्यप्रतिष्ठाञ्चकृतवान्ततदावधि । रत्नसिंहासनेदिव्येबलञ्चप्रथमन्त
तः ॥ ३८ ॥ तस्योत्तरेसुभद्राञ्चतस्याश्चोत्तरतःप्रभुम् । प्रभोश्चोत्तरतश्चक्रंस्थापयित्वायथाविधि
॥ ३९ ॥ एवंसंस्थाप्यविधिवत्ततोब्रह्महरेःपुनः । महाभिषेकङ्कृत्वाचतत्रदर्पणमण्डले ॥ ४० ॥
जजापमंत्रराजञ्चसहस्रंश्रद्धयान्वितः । ततस्तज्जपतोविप्राःसर्वेषांपश्यतान्तदा ॥ ४१ ॥ सनृ ॥३७॥

किया ॥ ३९ ॥ ब्रह्माजी सब के देखते हुए श्रद्धायुक्त होकर विष्णु के मंत्र को हजार बार जप किया ॥ ४० ॥ वहीं पर नृसिंह भगवान् चारि भुजा को धारण किये कमलनयन कोटि सूर्य की तुल्य प्रकाशित एतादृश भगवान् को ब्रह्मा के योग से

देखकर ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ देवता यक्ष गन्धर्व नाग अप्सरा और इन्द्रद्युम्न राजा आदि मनुष्य दुर्निरीक्ष्य भगवान् को देखक-कर अति आनन्दित भये ब्रह्माजी ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ नारायण का पूजन ध्यान करके स्तुति करने लगे ॥४५॥ इति श्रीउन्नाव प्रदेशान्तर्गत बरौडाग्रामनिवासी प० आनन्दमाधवदीक्षितात्मज प० महाराजदीनदीक्षित कृत भाषा टीकायां पंचमोऽध्यायः ॥५॥

सिंहोहिभगवान्पद्मासनगतःप्रभुः । चतुर्भुजोऽरविंदाक्षः कोटिसूर्यसमद्युतिः ॥ ४२ ॥ एवंरूपंत दाजातंब्रह्मणःकरयोगतः । एतादृशंनृसिंहन्तुदृष्ट्वासर्वेमहातपाः ॥ ४३ ॥ देवाश्चयक्षगन्धर्वा नागाश्चाप्सरसस्तथा । इन्द्रद्युम्नपुरोगास्तेमर्त्याश्चद्विजसत्तमाः ॥ ४४ ॥ दुर्निरीक्ष्यंहरिन्दृष्ट्वा त्रासंहर्षञ्चमेजिरे । ब्रह्माथरुद्रयाहस्तबहिष्कृत्यपुरःप्रभो ॥ ४५ ॥ शतोपचारैर्ब्रह्मातुसंपूज्याथस्तु तिञ्चरेत् ॥ इतिश्रीसूतसंहितायांनीलाद्रिमहोदयेपुरुषोत्तममाहात्म्येपञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

ब्रह्मोवाच । परम्ब्रह्मपरम्ब्रह्मपवित्रंचपरात्परम् । पूर्णानन्दमयंपूर्णन्निर्गुणंसच्चिदात्मकम् ॥ १ ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे परब्रह्म ! हे परब्रह्म ! पवित्रों में पवित्र पूर्ण आनन्दमय, निर्गुण, सच्चिदात्मक, वेदान्तवेद्य, सर्वतो मुख, अव्यय, अज, निरंजन, वाणीमन से अगोचर, ब्रह्म के रचने के हेतु आपके असंख्य प्रणाम हैं सूतजी शौनक से बोले

कि ब्रह्माजी जगन्नाथजी की स्तुति करके ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ पृथ्वी में दण्डाकार नमस्कार करते भये और विष्णु से बोले ॥ ४ ॥ आप जगत् से श्रेष्ठ संसार के आधार भक्तवत्सलहैं ॥ ५ ॥ आप स्वयं स्थित हैं और आपही में यह जगत् स्थित है आपकी प्रतिष्ठा को कौन करसक्ताहै हमारा क्या सामर्थ्य है ॥ ६ ॥ वैशाख शुक्ल अष्टमी गुरुवार पुष्य नक्षत्र में हे शौनक !

वेदान्तवेद्यम्परमंसर्वतोमुखमव्ययम् । अजन्निरंजनंतावद्वाङ्मनसगोचरम् ॥ २ ॥ नमःपरतरं तद्धैब्रह्मनिर्वाणकारणम् । सूतउवाच । इतिस्तुत्वाजगन्नाथंदेवदेवंवृषाकपिम् ॥ ३ ॥ ननामदण्ड वद्भूमौभक्त्याब्रह्माद्विजोत्तमाः । स्तुत्वाथपरयाभक्त्यापुनर्विष्णुंसुरेश्वरम् ॥ ४ ॥ उवाचजगतां श्रेष्ठापूजातेद्विजसत्तमाः । आधारस्त्वंचसर्वस्यजगताभक्तवत्सलः ॥ ५ ॥ प्रतिष्ठितस्त्वंसर्वत्र त्वयिसर्वम्प्रतिष्ठितम् । तवप्रतिष्ठाङ्कःकुर्याद्यन्त्वत्तःप्रतिष्ठिताः ॥ ६ ॥ वैशाखेमासिविप्रेन्द्राः शुक्लपक्षेगुरोर्दिने । पुष्यर्क्षेचयुताष्टम्यांप्रासादस्यमहोन्नतः ॥ ७ ॥ प्रतिष्ठाकर्मतत्कृत्वानरसिं हासनेविभुम् । इन्द्रद्युम्नायभूपायतत्रराज्यन्ददौमुदा ॥ ८ ॥ सूतउवाच । इन्द्रद्युम्नंचराजानन्द-

ब्रह्माजी प्रतिष्ठा करते भये ॥ ७ ॥ प्रतिष्ठा कर्म करके इन्द्रद्युम्न राजा को नृसिंह स्थान का राज्य दे दिया ॥ ८ ॥ सूतजी बोले कि इन्द्रद्युम्न राजा को देखकर लक्ष्मीपति दारुरूपधारी भगवान् गम्भीर वाणी से हे शौनक ! कुछ मुसकराते हुए

प्रथम सब तन देखकर बोले (प्रतिमा बोली) हे इन्द्रद्युम्न ! हे नृपश्रेष्ठ ! तुम हमारे भक्त हो इससे मैं प्रसन्न होकर तुमसे कहता हूं कि दो कोट द्रव्य के प्रदान से और दिव्यस्थान बनवाने से तुमारी मेरे में दृढ भक्ती हो यह उत्तम वर देता हूं ॥९॥ ॥ १० ॥ और वर देता हूं उसे सुनो तुमने हे राजर्षि सत्तम ! मेरे लिये बहुत सा यज्ञ किया जो अति कठिन है मेरे लिये

ष्ट्वाचकमलापतिः । दारुरूपधरःश्रीमान्प्राहगंभीरयागिरा ॥ ९ ॥ किञ्चिद्वद्धिहस्यदेविप्राःसर्वेषां पश्यतांपुरः । प्रतिमोवाच । इन्द्रद्युम्ननृपश्रेष्ठमद्भक्तोऽसियतोऽधुना ॥ १० ॥ प्रसन्नस्त्वामहंवच्मि तवनिष्कामकर्मतः । तत्प्रीतयेत्वयायद्वैकोटिवित्तप्रदानतः ॥ ११ ॥ दिव्यमायतनंसौम्यंसंपादित मनिन्दितम् । मयितेऽस्तुदृढाभक्तिर्ददामिवरमुत्तमम् ॥ १२ ॥ अमरंचवरंदास्येशृणुराजर्षिसत्तम । मदर्थेबहवोयज्ञान्कृत्वायच्चसुदुस्त्यजान् ॥ १३ ॥ कुटुम्बादिचवैत्यक्तंप्रामादश्चकृतोमहान् । अत्रातिष्ठामिनृपतेत्वत्कीर्तिपरिपालकः ॥ १४ ॥ सत्यंसत्यंपुनःसत्यंवदामिनृपसत्तम । ब्रह्मणोऽस्य

कुटुम्बादिक सब त्याग कर दिये मेरा अति उत्तम मन्दिर बनवाया इस कारण तुह्मारी प्रीति के पालन के लिये यही पर स्थित रहूंगा ॥ १३ ॥ मैं तुमसे सत्य २ कहता हूं कि ब्रह्मा के द्वितीय पहरार्धके अन्त तक दारुस्वरूप धारण किये प्रसन्न होकर यहीं

स्थित रहूंगा ब्रह्माने यहां पर यज्ञ किया है ॥ १४ ॥ १५ ॥ एकतो मेरा जन्म दिन नहीं है तथापि ज्येष्ठमें मेरा अवतार हुआ इस से आदर पूर्वक ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा को स्नान करना ॥ १६ ॥ स्नान समय विधि पूर्वक महोत्सव पूर्णिमा के दिन करना ॥ १७ ॥ फिर पटबन्द कर देना पंद्रह दिन जो कोई मुझे देखैगा वह अवश्य नरक गामी होगा ॥ १८ ॥ आषाढ शुक्ल द्वितीया

परार्द्धस्यद्वितीयस्यचभूपते ॥ १५ ॥ आसमासिप्रसन्नोहंस्थास्यंदारुस्वरूपभाक् । स्वायंभुवः कृतेतत्रदर्शेतवमखांचिते ॥ १६ ॥ अवतीर्णःस्वयंज्येष्ठयांनचजन्मादिनंमम । तत्पौर्णिमादिनेभूप स्नानंमेकार्यमादरात् ॥ १७ ॥ महास्नानवि॰ ॰भक्त्यायथाविधिमहोत्सवैः । संस्नाप्यपौर्णिमायांच ततोमेधरणीपते ॥ १८ ॥ विरूपंवास्वरूपंवानपश्येत्कोपियत्नतः । दशपंचादिनंव्याप्यपश्येच्चना रकीभवेत् ॥ १९ ॥ अषाढस्यचमासस्यासितपक्षेऽर्थभूपते । पुष्यर्क्षेचद्वितीयायान्तत्रकुर्याद्रथोत्स वम् ॥ २० ॥ समारोप्यरथेदिव्येचानीत्वाथमहोत्सवैः । यज्ञवेदीप्रतिख्यातंतत्रसंस्थाप्यमांनृप२१

पुष्य नक्षत्र में रथोत्सव (रथयात्रा) करना ॥ १९ ॥ हे नृप ? दिव्य रथमें मुझको चढाकर यज्ञ वेदी में स्थित करना ॥२०॥ सात दिन तक विधि पूर्वक यज्ञ वेदी में पूजन करना फिर दिव्य रथ को लेकर ॥ २१ ॥ महोत्सव करते हुये आषाढ शुक्ल

एकादशी को हे भूप ! मेरा शयन कराना और कर्क सक्रान्ति के दिन हे वीर ? संसार के सुखदेनेवाला उत्सव करना और
भाद्रपद शुक्ल पक्ष की एकादशी के दिन ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ मुझको करवट कर देना और कार्तिक शुक्ल एकादशी को
जगत् को आनन्ददेनेवाला परम भक्ति से मुझे उठाना (उसी को देवोत्थानी एकादशी कहते हैं) ॥ २५ ॥ २६ ॥ महीनो में

सप्तवासरमालम्ब्याविधिवत्तत्रपूजयेत् । ततस्तस्मिन्रथेदिव्येतदेवाशुसमानय ॥ २२ ॥ एवम्महो-
त्सवःकार्य्योगुण्डीचाक्षोमहामते । आषाढस्यचमासस्यशुक्लेपक्षेतथानृप ॥ २३ ॥ एकादश्यान्ति
थौभूपकर्त्तव्यंशयनंमम । कर्कटस्यचसंक्रान्त्यामयनेऽस्मिन्दिनेमम ॥ २४ ॥ कुर्यान्महोत्सवंवीर
सर्वलोकसुखप्रदम् । मासिभाद्रपदेपक्षेसितेचैकादशीदिने ॥ २५ ॥ मदीयस्यचपार्श्वस्थपरिवर्त-
नमाचरेत् । कार्तिकस्यामलेपक्षेमासस्याथशुभप्रदे ॥ २६ ॥ एकादश्यांतिथौतत्रमदुत्पादनकर्मत-
त् । कर्त्तव्यंपरयाभक्त्याजगदानंदवर्द्धनम् ॥ २७ ॥ मासानांप्रवरोराजन्मार्गशीर्षेऽतिहर्षदे ।

श्रेष्ठ अगहन (मार्गशीर्ष) शुक्ल छठ के दिन दिव्य वस्त्रो करके मेरो आभूषण करना और पौष शुक्ल पूर्णिमा के ॥ २७ ॥
॥ २८ ॥ पुष्पों (फूलों) से अति उत्सव करत हुए अभिषेक कर फिर मकर संक्रान्ति (उत्तरायण सूर्य के प्रारम्भ) मे यथा

विधि पृथ्वी में महोत्सव करै और फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा को हे राजर्षि ? प्रसन्न मन होकर ॥ २९ ॥ ३० ॥ परमभक्ति से दोला (हिंडोला) करै और चैत्र शुक्ल चतुर्दशी को ॥ ३१ ॥ मेरे अङ्गमें दमनकार्पण करै और वैशाख शुक्ल तृतीया को मेरे शरीर में

सितायांञ्चतिथौषष्ठ्यांदिनेदिव्यांबरैर्मम ॥ २८ ॥ प्रावृत्तींरचयत्क्षिप्रंतदेवनिवृतिप्रदाम् । पौर्णि

मास्यांसितेपौषेपुष्यर्क्षेनृपसत्तम ॥ २९ ॥ तत्तत्पुष्पाऽभिषेकम्मेमहोत्सवतयाकुरु । तथोत्तरायणे
मासिसंक्रान्त्याम्मकरेनृप ॥ ३० ॥ महोत्सवंप्रकुर्यान्मेयथाविधिधरातले । फाल्गुनेमासिराजर्षेपौ
र्णिमायांत्रहर्षितः ॥ ३१ ॥ दोलाकेलिचकर्तव्याभक्त्यापरमयानृप । चैत्रेमासिचतुर्दश्यांसितेपक्षे
महीपते ॥ ३२ ॥ यथाविधिमदीयाङ्गेकुर्यादमनकारणम् । वैशाखस्यचमासस्यसितेपक्षेऽतिपाव-
ने ॥ ३३ ॥तृतीयायान्तिथौतत्रमद्गात्रेचारुचन्दनम् । विलिप्यश्रद्धयाभूपमहोत्सवतयाततः ॥३४ ॥

चन्दन को लेप करके अति समारोह से उत्सव करै ॥ ३२ ॥ और जलभ्रमण कराय इसप्रकार हे शौनक ? नारायण जगन्नाथजी ने बारह यात्रा अपनी कही यह प्रतिवर्ष करना चाहिये सूतजी बोले कि दारुरूपधारी विष्णु यह कहकर ॥३३॥ ३४ ॥ ३५ ॥

चुप हो गये और राजा इन्द्रद्युम्न आति कृतार्थ हुआ उसी समय राजा ब्रह्माजी के नमस्कार किये ॥ ३६ ॥ विष्णु के वचन सुनकर राजा बोला कि हे ब्रह्मन् ! अपनी इच्छा से विष्णुजी चार प्रकार से अवतार लेते भये यह कहकर राजा विष्णु वासुदेव बलभद्र सुभद्रा जगन्नाथ सुदर्शन आदि को देखकर प्रसन्न मन प्रत्येक नामसे सब लोग जय जय शब्द करने लगे ॥ ३७ ॥ ३८ ॥

जलभ्रमणमंबंचमदीयताद्विधीयताम् । इयंद्वादशयात्रामेपवित्राःसर्वकामदाः ॥ ३५ ॥ प्रकाशिना मयाभूपकर्त्तव्यंप्रतिवर्षनः ॥ सूतउवाच ॥ इत्युक्त्वाभगवान्विष्णुदारुब्रह्मशरीरभाक् ॥ ३६ ॥तूष्णींभूयोभवाद्विप्राःकृतार्थोऽजनिभूपतिः । तदानींसमहीपालःस्रष्टारंप्रणिपत्यच ॥ ३७ ॥ श्रुत्वाबभाषेयद्विप्रास्तदाकर्णयतत्स्फुटम् ॥ इन्द्रद्युम्नउवाच ॥ ब्रह्मन्पुरास्वयंविष्णुश्चतुर्द्धाचावतारवान् ३८ तन्तथारचयत्क्षिप्रमिदानीञ्चैवसप्रभुः । इत्युक्तःसहसाब्रह्मातेनभूपेनभोद्विजाः ॥ ३९ ॥स्पृष्ट्वा तदाकरेविष्णुंवासुदेवमनूपमम् । बलभद्रन्तथाभद्रांजगन्नाथंसुदर्शनम् ॥ ४० ॥ दृष्ट्वाहृष्टतराजा

॥ ३९ ॥ ४० ॥ ति श्री उन्नाव प्रदेशान्तर्गतबरौडा ग्रामनिवासी पं० आनन्दमाधवदीक्षितात्मज पं० महाराजदीनदीक्षित कृत भाषा टीकायां षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

सूतजी बोले कि हे शौनक! अब हम दर्शन की विधी वर्णन करते हैं सुनो प्रथम मार्कण्डेय वरगद के निकट स्नान करै ॥१॥
 फिर मार्कण्डेयजी का दर्शन करै। और प्रासार में आकर चक्र के दर्शन करै ॥ २ ॥ फिर वरगद के निकट जाकर वट (वरगद)
जो अव्यय है उसे नमस्कार और प्रदक्षिणा करके गणेशजी को नमस्कार करै ॥ ३ ॥ हे शौनक! वटेश्वर को नमस्कार करके

 ताजयशब्दंचचक्रिरे ॥४१॥ इतिश्रीसूतसंहितायांनीलाद्रिमहोदयेपुरुषोत्तममाहात्म्येषष्ठोध्यायः ॥६॥
सूतउवाच । अथवक्ष्येसुरवरादर्शनस्यविधिन्तदा । मार्कण्डेयोवटेरम्येप्रथमंस्नानमाचरेत् ॥ १ ॥
मार्कण्डेयेश्वरम्मर्त्योहरंपश्येदुदारधीः । ततःप्रासादमागत्यप्रणमेच्चक्रमुत्तमम ॥ २ ॥ वटमूलंततोग-
त्वाप्रार्थयेद्वटमव्ययम् । वटंप्रदक्षिणीकृत्यगणेशंप्रणमेत्पुनः ॥ ३ ॥ ततोवटेश्वरंनत्वामङ्गलांप्रार्थ
येत्सुधीः । क्षेत्रपालन्नमस्कृत्यनरसिंहंतथाद्विजाः ॥ ४ ॥ विमलंविमलास्थानङ्गत्वातांप्रार्थयेत्सु-
धीः । पातालेश्वरदेवेशमीशानेश्वरमेवच ॥ ५ ॥ प्रणमेद्वरयाभक्त्यावै तेयन्तथाद्विजाः ।

मङ्गला देवी की प्रार्थना करै फिर क्षेत्रपाल के नमस्कार करके नरसिंह के दर्शन करै ॥ ४ ॥ विमलस्थान में जाकर विमला की
प्रार्थना करके पातालेश्वर ईशानेश्वर वरुणजी जय विजय को भक्तिपूर्वक प्रणाम करके स्तुति करै ॥ ५ ॥ ६ ॥ बलभद्र सुभद्रा

जगन्नाथजी सुदर्शन को दण्डाकार पृथ्वी में प्रणाम करके स्तुति करै ॥ ७ ॥ इस प्रकार जो मनुष्य विष्णु का दर्शन करता है उसको पद पद में अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त होता है इसमें कुछ भी संशय नहीं है ॥ ८ ॥ इतिश्रीउन्नाव प्रदेशान्तर्गत बरौंडा ग्राम निवासी पं० आनन्दमाधव दीक्षितात्मज पं० महाराजदीन दीक्षित कृत भाषाटीकायां सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

जयंचविजयंचैवस्तुत्वानत्वापुनःपुनः ॥६॥ बलभद्रंसुभद्रांचजगन्नाथंसुदर्शनम् । स्तुत्वापरमया भक्त्याप्रणमेद्दण्डवद्भुवि ॥ ७ ॥ इत्थंयःकुरुतेमर्त्योविष्णोर्दर्शनमुत्तमम् । पदेपदेऽश्वमेधानांफलं प्राप्नोतिदुर्लभम् ॥ ८ ॥ इतिश्रीसूतसंहितायांनीलाद्रिमहोदयेपुरुषोत्तममाहात्म्येसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ सूतउवाच ॥ दर्शनान्तेततोगच्छेत्श्वेतगङ्गांशुभोदयाम् । प्रार्थयेत्परयाभक्त्यासर्वपापोपशान्तये ॥ १ ॥ स्नानंचविधिवत्कुर्यान्माधवौतौविलोकयेत् । उग्रसेनान्तिकङ्गत्वाप्रार्थयेदतिभक्तितः ॥ २ आज्ञांसंप्रार्थ्यमार्गेतुहनुमन्तंविलोकयेत् । ततस्तुत्वाचनत्वाचतीर्थराजान्तिकं-

सूतजी बोले कि हे शौनक ! सम्पूर्ण पापों को शान्ति के लिये दर्शन के बाद श्वेतगङ्गा को जाय ॥ १ ॥ वहां विधिवत स्नान करके नीलमाधव भगवान् को दर्शन करै फिर उग्रसेन के निकट जाकर भक्तिपूर्वक प्रार्थना करै ॥ २ ॥ यहां से आज्ञा

लेकर हनुमानजी का दर्शन स्तुति नमस्कार करके तीर्थराज के निकट जाय ॥ ३ ॥ सातो समुद्रों को प्रणाम कर विधिपूर्वक पाप के शान्ति के लिये संकल्प करै ॥ ४ ॥ फिर नीलाचल स्वामी विष्णु की प्रार्थना करै और लोकनाथ में जाकर भक्तिपूर्वक प्रार्थना करै ॥ ५ ॥ इन्द्रद्युम्न तालाव के निकट जाकर नीलकंठ परमेश्वर कपालमोचन की प्रदक्षिणा करके नमस्कार करै जो कोई

व्रजेत् ॥ ३ दण्डवत्प्रणमेत्तस्मैसप्तवारिधिमव्ययम् । सङ्कल्पंविधिवत्कृत्वादुरितक्षयपूर्वकम् ॥ ४ ॥
नीलाचलपतेर्विष्णोःप्रार्थयेद्द्विजसत्तमाः । लोकनाथन्ततोगच्छेत्प्रार्थयेदातिभक्तितः ॥ ५ ॥
इन्द्रद्युम्नसरस्तीरेनीलकंठंनमेद्बुधः । यमेश्वरंनमस्कृत्यकपालमोचनन्तथा ॥ ६ ॥ एवम्प्रद-
क्षिणंकुर्यात्पञ्चम्यान्द्विजसत्तमाः । कोटिगोदानजंपुण्यंवाजपेयफलंलभेत् ॥ ७ ॥ सूतउवाच ॥
ब्रह्महत्यादिपापघ्नंनिर्माल्यंजगदीशितुः । भजतांद्विजशार्दूलाःमुक्तिस्तेषान्नदुर्लभाः ॥ ८ ॥
जगन्नाथस्यनैवेद्यम्महापातकनाशनम् । भक्षणात्फलमाप्नोतिकपिलाकोटिदानजम् ॥ ९ ॥

इस प्रकार करता है उसको कोटि गोदान तथा वाजपेय यज्ञ का फल होता है ॥ ६ ॥ ७ ॥ सूतजी बोले कि हे शौनक ! जगन्नाथजी के निर्माल्य से ब्रह्महत्यादि पाप नाश हो जाते हैं उसको मुक्ति फिर दुर्लभ नहीं है ॥ ८ ॥ जगन्नाथजीका नैवेद्य महा-

पातक के नाश करनेवाला है जिसके खानेसें कोटि कपिला गौ के दान का फल प्राप्त होता है ॥९॥ चाण्डाल से भी छुआ अन्न भोजन करैं कारण कि वह देवता को दुर्लभ है ॥ १० ॥ यज्ञ तपस्या व्रत बिधि तीर्थों में घूमना और जो कुछ किया पाप पुण्य कर्म सभी तभी सुकृत होते हैं जब जगन्नाथजी का प्रसाद करता है ॥ ११ ॥ उसीं से पितर देवता महर्षि सन्तुष्ट

चाण्डालादिद्विजस्पृष्टंतदन्नंद्विजसत्तमाः । भोक्तव्यंसहसाविप्रैःपावनंसुरदुर्लभम् ॥ १० ॥ यज्ञास्तपांसि विप्रेन्द्राःव्रतानिविविधानिच । तीर्थाटनानितेनैवकृतानिसकृतानिच ॥११॥ पितरस्तर्पितास्तेनतथादेवा महर्षयः । गवांकोटिप्रदानाच्चवाजपेयशतन्तथा ॥ १२ ॥ अश्वमेधसहस्रस्यराजसूयशतंचयत् । व्रतोपवासतोविप्राःयत्फलंजायतेभुवि ॥ १३ ॥ तत्फलंसमवाप्नोतिजगन्नाथान्नभक्षणम् । कुकुरस्यमुखाद्भ्रष्टंतद्भ्रा-ह्यन्दैवतैरपि ॥ १४ ॥ तस्मात्तदन्नसहसाप्राप्तमात्रंतदश्नियात् । विचारणानकर्त्तव्यानकर्त्तव्याकदाचन

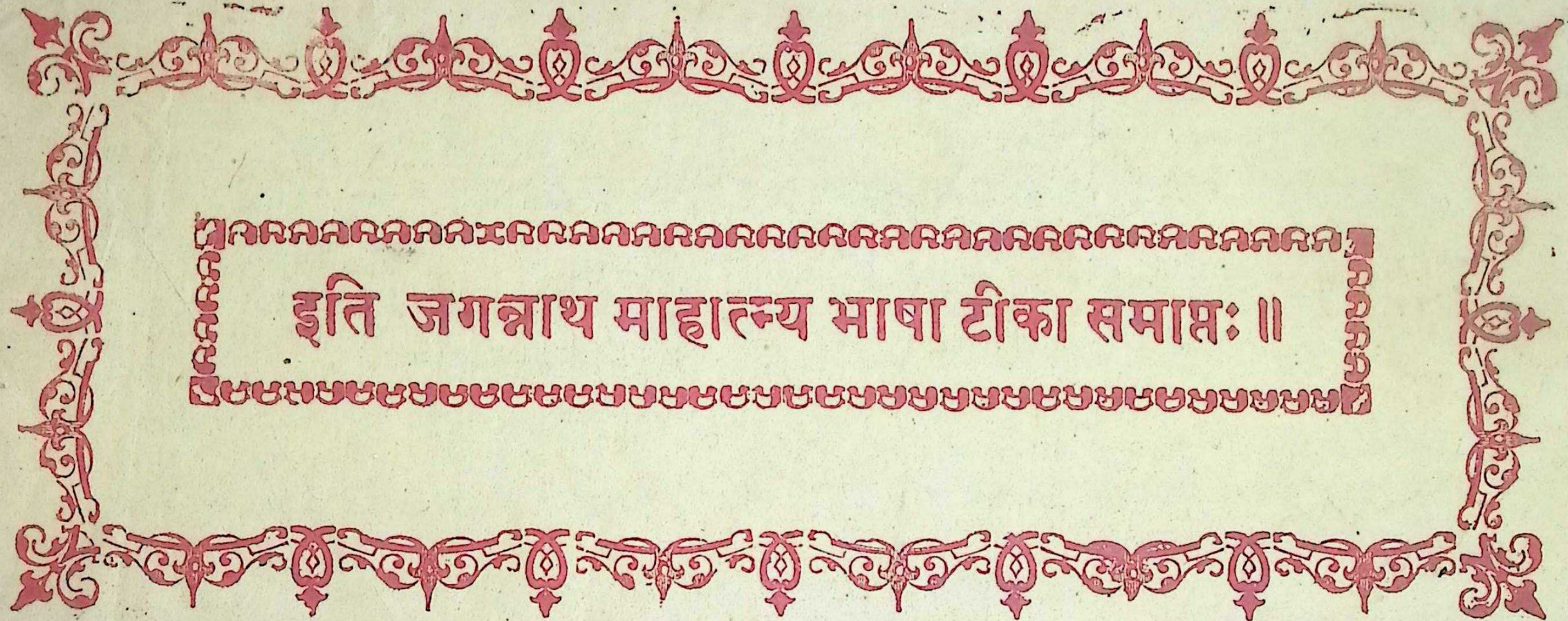
होते हैं, कोटि गौवों का दान सैकड़ों वाजपेय यज्ञ हजारों अश्वमेध सैकड़न राजसूय यज्ञोंका फल होताहै वही फल जगन्नाथ जी के प्रसाद भक्षण से होता हैं देवता भी जगन्नाथजी के प्रसाद जो कि कुत्ते से दूषित हैं उसकी इच्छा करते हैं ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ १४ ॥ और इससे हे शौनक ? भक्तिपूर्वक जगन्नाथजी के प्रसाद को भक्षण करै कभी भी विचारा विचार न करै

॥ १५ ॥ साक्षात् ब्रह्मस्वरूप जगन्नाथ जी हैं इसमें कुछ भी संशय नहीं है जो कुछ प्राप्त हो जाय उसे भोजन करके प्रसन्न होवे ॥ १६ ॥ नीलाचल स्थायी नारायण के दर्शन से उसी को फल प्राप्त होते हैं उसी की लक्ष्मी याचिका और भोक्ता नारायण है जिसने भक्ति पुर्वक श्रीजगन्नाथजी के प्रसाद को भक्षण किया है और वही बिष्णुलोक का राजा होता है इसमे

॥१५॥ साक्षाद्ब्रह्मस्वरूपोऽयंजगन्नाथोनसंशयः । प्राप्तमात्रेणखादन्तिहृष्यन्तिचपुनःपुनः ॥१६॥ तेपि नीलाचलस्थायीहरेर्दर्शनतःफलम् । यस्यापियाचिकालक्ष्मीर्यस्यभोक्ताजगत्पतिः ॥ १७ ॥ तदन्नाशनतो विप्राः विष्णुलोकेमहीयते । इन्द्रद्युम्नोपिभूपालोनारदेनसमन्ततः ॥१८॥ समारुह्यविमानाग्र्यंसत्यलोकं समाययौ । इत्थंसंस्थापितंविष्णुंइन्द्रद्युम्नैर्महात्मभिः । पठतांशृण्वतांपुंसांतद्दर्शनफलंमेलत ॥ १९ ॥ इति श्रीसूतसंहितायांनीलाद्रिमहोदयेपुरुषोत्तममाहात्म्येऽष्टमोध्यायः ॥ ८ ॥ संपूर्णम् ॥

कुछ भी संशय नहीं है इन्द्रद्युम्न राजा नारद के साथ॥१७॥१८॥ सुन्दर बिमानमें चढ़कर सत्यलोक को चले गये इस प्रकार हे शौनक ? इन्द्रद्युम्न राजा करके बिष्णु जगन्नाथजी स्थापित किये गये ॥ जो कोई इस पुनीत कथाको पढ़ेगा सुनेगा सुनावेगा उसको श्रीजगन्नाथजी के दर्शन का फल प्राप्त होगा इसमें कुछ भी संशय नहीं है ॥ १९ ॥ इति श्रीउन्नावप्रदेशान्तर्गतबरौड़ा ग्रामनिवासी पं० आनन्दमाधवदीक्षितात्मज पं० महाराजदानदीक्षित भाषा टीकायां अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

॥४३॥


इति जगन्नाथ माहात्म्य भाषा टीका समाप्तः ॥